

11111  
9  
105  
100

aggreſſus eſt fugam: et ab  
oculis uſq; ad occidentem p  
uenit: niſiquam ſibi uitam  
niſi in ſuge ſubſidio ſperans.  
Iſ q; urbem romanam ingreſſus.  
utris admiraculo aſſerens.  
ſibi et adherens demouit eum.  
tutis quera pardeſt. **De**  
breui tempe intanti hanc  
uitam pfectum: ut ena ſymu  
lachrya a cunib; romanis tanq;  
Deſ horror peruenit. **XIII**

**S**ed non in longum pmanet:  
ſtande queſtra diuinitas.  
Eorum uo nempe in ipſis clari  
diu templis clemencia curie  
pudore. p. batiſſimum om  
nium et obſerua maximu

duationis uerbo p. prius in  
romana ciuitate ſi clauis  
miam celeſtis regni apu  
ſtuit cum romane urbi  
clarum uerbi dei lumina  
exortim: ſimonis quide  
neber cum ſuo audore ut  
ſe ſunt. Sermo aut uarta  
licis qui p. petrum p. dica  
uuiſoz merites plando  
Arauit auduit: ita ut cor  
audientibus cum ulla ſaci  
ficet. Sende cum neq; an  
ſola eis ſufficeret: manna  
cipulum eius  
probat: ut  
p. dica bat. ad  
dominorem hanc em

Ce  
611



Stilol. 314.



Fla. 44.



Ce 2901.



CHIONIS PLATONICI

EPISTOLA



Edita opera Ioannis Caselij.



Hic est ille Chion, Philosophus  
quidem, sed Martios tamen  
gerens spiritus: qui Clearchum,  
Heracleæ Ponticæ crudelissimum  
tyrannum de medio sustulit.



ROSTOCHII

Typis Stephani Myliandri.

Anno MDXXIII.



IOANNES CASELIUS  
S. D.  
EVGENIO CHRISTO  
PHORI F. COLONIO.

**S**unt, Coloni, qui Græcum sermo-  
nem, hodie præsertim, quando fu-  
it ille orbis olim oculus, Græcia,  
nulli usui esse, nec nisi hominum otiosorum de-  
licias putent: idq; tempus, quod illi cognoscen-  
do tribuitur, pilæ dandum, aut aleæ, aut con-  
uiujs. Quid putent? Permulti equidem,  
qui se tamen studia doctrinæ profitentur cole-  
re, in alijs potius sunt quibusuis, quàm ut lin-  
guam venustissimam, sibiq; cum primis ne-  
cessariam propter eius usum in omnibus par-  
tibus sapientiæ perpetuum, discant. Fateor  
esse, qui lectione Græcorum scriptorum ludât  
ita, ut talis pueri: qui cum ne eos quidem  
rectè intelligant, tamen Græcè scriptitant:  
sed hos non moramur, qui ut verbis sic in  
rebus balbutiunt, dum in vulgus stultam in-  
scitiam

scitiam venditant pro sapientia. Tu neq<sup>3</sup> ho-  
rum inepta diligentia, neq<sup>3</sup> illorum falso iudi-  
cio moueris, & quod optimo consilio institu-  
isti, virili constantia persequeris, & omnino  
perficere in animum induxisti: tibiq<sup>3</sup> ipsas  
etiam litteras Gracas, hoc est liberalium ar-  
tium thesauros comparas: quæ cum tibi præsidi-  
o sint futura, tu iisdem præsidio patriæ esse  
possis. Non parcis labori, quod veluti pre-  
cium est pro nobilissima merce, puta gemmis  
sapientiæ: neq<sup>3</sup> sumptui parcis, cum obrizum  
vilius illa esse, rectè tibi persuaseris: neq<sup>3</sup> po-  
teris te illicitis voluptatum contrariarum in-  
escari: cum vero etiam vites consuetudinem  
malorum, tum ita studes æqualibus, ne cuius-  
quam te suauitas in hoc cursu tam nobili re-  
tardet. Premium tibi paratum est maius,  
quàm quod uni dabatur, qui vicisset olym-  
pia: neq<sup>3</sup> id à quoquam cuiquam præripia-  
tur. Tale enim est, cuius cum multis parti-  
ceps possis fieri: nec est, cur hoc minus velis.  
Inter eos enim, qui ad virtutem contendunt

A 2

Et sa-



Et sapientiam, non aliter vivitur: non mi-  
nor maiori, nec maior minori, nec equalis &  
quali invidet. Sed olim ita magis senties, ubi  
ad metam perveneris. Reliquum erat, ut  
te, quod moris est, cohortarer: quo ego labore  
superfedebo, tum quia id antè à me factum  
fuit, tum quia nequaquam opus esse intelligo.  
Cum enim puer ultro feceris, qua tui officij e-  
rant; deinceps ita te geres, (radices enim egisti  
ἐν τῇ ἀληθείᾳ σπουδῇ, ἀφ' ἧς καὶ φιλόσοφοι γινόμεθα, καὶ  
σπουδαῖοι λεγόμεθα) ut expectationem, quam  
de te concepimus singularem, non solum susti-  
neas, sed etiam superes. Ego, quod magno-  
pere cupio, libenter auguror. Faueo adole-  
scentiæ, tibi faueo maximè. Faueo enim ijs  
maximè, quibus animus est simplex, ingeni-  
um acre: ut quos sciam, ubi bonis litteris  
probè expoliti fuerint, ornamento futuros Et  
usui reipublicæ. Vale. Rostochio,

IIX. K. Sext. Anno

CIO IO XXCIII.

ΕΠΙ-

# ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

ΧΙΩΝΟΣ.

ΜΑΤΡΙΑΙ. 1.



Πέδωκέ μοι λύσις τῶν ἐπιστολῶν τρίτῃ  
 ἡμέραν ἤδη περὶ βυζάντιον διατρέξον-  
 τι, δι' ἧς τῶν σαυλοῦ σύγχυσις καὶ πάσης  
 τῆς οἰκίας ἐδήλους μοι. ἀλλ' ὅ μὲν οὐκ,  
 ὅσοις ἐνεστὶ παραμυθήσαστά σε, ταῦτ' ἂν  
 διεξῆται, καὶ τὰς ἐκ τῆς ἀποδημίας ἐλπίδας ἐξηριθμῆται, καὶ  
 ταῦταις ἐπὶ ἀντιρόπον λύπης ὀφροσύνῃ καθίστατο: ἐγὼ δὲ  
 τοῦτ' αὐτὸ ἀξίω παρ' ὑμῶν γνέσθαι, ὅπως ἀθλὸν μοι τῆς  
 ἐλπιζομένης δρετῆς κατεστήσῃτε, τὸ μακάριον ὑμᾶς ποιῆ-  
 σαι γονεῖς, ἀλλὰ μὴ τὸ παραμυθίαν ἐκ τῆς ἐμῆς παιδείας  
 προσδεχέσθαι, μὴ λυπουμενὸς ἢ δυστυχίαν. ἀμεινον δὲ, ὡσπερ  
 ἀθλοφύρω μείζονά μοι προσδεῖναι τὰ ἀθλα, ἵνα κρείττων  
 ᾖ ἐπὶ αὐτὰ ἀγωνιστῆς γνῶμαι. οὕτως οὐκ διάκεισο, ὡ πάτερ,  
 καὶ παραμυθῶ τῶν μητέρα: εἴπερ' ἀρα ἐκείνῃ μὲν ἐν τοῖς  
 πάρηγορουμένοις, σὲ δὲ ἐν τοῖς πάρηγοροῦσι τετάχθαι  
 προσήκει.

animo ghris  
 f. ota ey  
 mra ab in  
 hia d' d' d' d' d'  
 ab. y. s. r. i.  
 h. y. s. r. i.  
 y. s. r. i.  
 u. l. e. m.  
 f. g. m. u. l.  
 f. u. b. i. n. a. g. i. t.  
 f. u. l. i. a. i. s.  
 f. r. e. i. a. s.  
 f. u. l. i. a. i. s.  
 f. u. l. i. a. i. s.

" Cic. 7. Att. ep. 8. " βύχου.  
 bin τῆς πολιτείας fore.  
 At f'ingit e' i' d' d' d' d' d'  
 1. s' m' p' m' m' e' t'  
 . s. Eulaxia n. x' d' o.  
 Eulaxia requiritur  
 etiam ad felicitatem. d.  
 τεκνία ρυπαίνει τὸ μα-  
 κάριον. ἡδ. κ. α.  
 tan' s' p' m' l' i' s' e' t' t' a. i. m' a' i' o' u' h' i' e' s' t'  
 N. f' m' i' s' p' r' o' p' r' i' a' s' a' l' a' i' o' u' s' m' a' l' o' g' i' o' u' s'

## II.

Θράσων ἐμπορεύεται μὲν τὸν πόντον, χρηστὸς δὲ μάλ-  
 λον ἢ κατὰ τῶν ἐπιτήδευσιν εἶναι μοι δοκεῖ: καὶ νῦν ἐν βυ-  
 ζαντίῳ γνόμενος, ἔχω τινὰ αὐτῷ χάριν. θεάσασθαι γάρ  
 μοι βουλομένῳ τὰ περὶ χώραν ἄξια θεᾶς ὄντα, ἠγεμῶν  
 τοῦ ὁδοῦ ἐχμέτο; καὶ τὰλλα ἐπεμελήθη, ὅπως μὴ πονηρὰ  
 ᾖ πρὸς ἡμῖν.

na. l. x. l. i. s. i. s.  
 p. i. e. r. i. a.  
 f. u. l. i. a. i. s.  
 f. u. l. i. a. i. s.

Corpus m' d' d' d' d' d' d'  
 s' p' m' l' i' s' e' t' t' a. i. m' a' i' o' u' h' i' e' s' t'  
 x. l. i. s. i. s' h' o' r' o' y' - i. q' u' i' a' i' o' u' s'  
 a' x' e' i' s' t' i' s.  
 f. u. l. i. a. i. s' h' u' b' i' t' a' m' g' r' a' t' i' s'  
 f. u. l. i. a. i. s' m' u' n' d' o.  
 f. u. l. i. a. i. s' q' u' i' a' i' o' u' s' m' a' l' o' g' i' o' u' s'

Χριστομήτριαι.

ΧΙΩΝΟΣ

Β' αι' εστ

τα ρη νε, hichln

deusa foliz med  
argyma - 1 -  
familiā. Aumentu 7

g. x. p. r. v. r. d. r. i. n. d. o. m. i. n. u. s.  
f. i. d. e. i. s. u. s. q. u. o. d. e. s. t. i. s.  
u. n. i. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.

χρνορθε 94. olympra 3.  
floruu

sed occasu fumi salis q. m. d. n.  
πλοφασια φεφθη  
κρυσταυτ' ημων - 1 - μαρτυρ  
ch. i. s. v. e. n. t. y. n. o. s. a. n. t. i. s.  
n. i. s. t. e. n. -

quod alij fuit  
pauq. m. i. s. t. e. r. i. a. s. t. i. c. a. n. t. i. a. n. t. e. m.  
i. u. d. i. c. e. q. u. o. d. e. s. t. i. s. i. n. i. s. t. i. c. a. n. t. i. a. n. t. e. m.

Wan... in...  
v. i. s. t. y. n. u. p. r. o. p. t. i. s. i. n. i. s. t. i. c. a. n. t. i. a. n. t. e. m.  
n. i. s. t. e. n. -

v. i. s. t. y. n. u. p. r. o. p. t. i. s. i. n. i. s. t. i. c. a. n. t. i. a. n. t. e. m.  
o. i. n. t. e. r. p. r. o. d. u. c. i. s.

εις ημιν η οδος, και κωηγελικη γροίτο: αλλα οχηματων  
τε χαριν και της αλλης παρασκευης αβροτερα. τωτον ως  
υμας πλεοντα ωθηθη ταυτη τη μαρτυρια συμπαραπέμ-  
IB ψαι δειν. θεας μεν ουδ' εδεν οίμαι χηζει, κατετραβ-  
μεν θ' εκ πολλου χρόνου τον πόντον: εις η τλω οικίαν δη-  
λον, ως κατὰ το σεαυτου ηθ' ε' υποδέξη προθύμως αυ-  
τόν. εγώ δε ωρημαι μεν εκωλεν, άνεμου η ουκ ε'πι-  
τραχάνω.

III. h. a. t. e. o. T. o. a. i. t. a. d. H. h. u. i. r. e. p. i. i. n. e. x. p. i. t. u. m.  
Πολλω χάριν οίδα τοις ε'πιταρουσιν ημας άνεμοις και  
τλω εν βυζαντιω διατριβω βιασαμένοις: καιτοι τοπρω-  
τον ηχθόμενω αυτοις επειγόμενθ'. αλλα γδ αξια προφα-  
σις και χρονωτέρας μονης ε'φάνη ξενοφών ο σωκράτους γνώ-  
ριμθ'. ουτθ' γδ ο ξενοφών εις των ε'πι' δε'λαξέρβω στρα-  
τωσαμένων ελλείων κυρω δε συμμαχων, εστ'. και το  
μεν πρώτον μετα λινθ' των στρατηγών λω, εδεν πολυπρα-  
γμονών, οτι μη στραιώτλω εχελω, ωσπερ εις ων των κυρω

N. πριών. ως δε κυρός τε απέθανεν εν τη πρώτη μάχη, και  
επληρωσθησαν τα ελλείοντα παραπονοδθέντες απετμηθησαν  
τας κεφαλās, ηρεθη στραηγός, άνδρίας τε ενεκα και της  
αλλης σοφίας, δοκων άριστα αυ διαπράξασαι τλω σωτη-  
ριαν τοις ελλησι: και ουκ ε'ψδισαν αυτοις της ελπίδθ',  
αλλα δια μέσης πολεμίας γης ολιγω στραταν αγων πει-  
σώσατο, εκάσης ημέρας τοις βασιλεωσ στραηγοις παρασρα-  
τοπεδαιόμενθ'. θαυμασα μεν ουδ', και ταυτα: πολυ η του-  
των θαυμασιώτερόν γε και μείζον, όπερ αυτός εγώ νυν εθεα-  
σάμενω.

g. m. d. n. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.  
h. i. c. h. i. c. h. e. n. t. u. s. d. e. u. s. p. a. t. e. r. f. i. l. i. u. s. s. p. i. r. i. t. u. s.

Ε Η Ι Σ Τ Ο Λ Α Ι.

σάμην. πεπονημένοι γὰρ οἱ Ἕλληες πολυχρονίῳ καὶ χαλεπῇ.

εραλείᾳ, καὶ μηδὲν ἄλλο ὄρημενοι τῶν κινδύων ἄθλον.

ἄλλω τῆς σωτηρίας, δεξαμένων αὐτοὺς καὶ φόβον τῶν βυ-

ζαντίων, ἔγνωσαν διαρπάσαι τὴν πόλιν, καὶ πολὺς ταραχος

αἰθουσίως κατέχευε οὗ βυζαντίως. ἐπεὶ ἡ ὠπλιζόντο τε οἱ

Ξενοί, καὶ ὁ σαλπικτῆς ἐσήμαινε, ἐγὼ μὲν ἀσπίδα καὶ λόγ-

χλω ἀρπασας, ἐφραμόν ἔπι τὸ τεῖχος, ἔ τῶν ἐφίθων τινὰς

συωετηκότας ἐώρων. ἦν ἡ Φυλακὴ τῶν τειχῶν ἔδεν ὠφε-

λιμῶ, πολεμίων καλεχονίῳ τὴν πόλιν. ἀλλ' ὁμως ῥᾶον

ἐνομίζομεν ἀμυνεῖσθαι, πλεονεκτείντες τὰ τόπων, ἢ ἀπολείδαι

γε βραδύτερον. κὰν τούτῳ ταραχομένων τῶν Ἑλλήνων, ἐωρῶ-

μεν κομητῶν ἀνδρα καλὸν πάνυ, καὶ πρᾶον ιδέσθαι, διεξιόντα

μὲν δὲ αὐτῷ, καὶ παύοντα τῆς ὀρμῆς ἕκαστον. ἔ τῶν δὲ αὐτῷ ὁ

Ξενοφῶν, ὡς ἡ ἐκ τῶν ἐναντίων παρεκαλοῦσθαι αὐτὸν οἱ στρα-

τιῶτα, ἐνα ὄντα πολλοῖς πείθεσθαι, καὶ ἀναπαύσαι πρὸς αὐ-

τοὺς τῆς αἰλαιπύρας καὶ χαλεπῆς ἀληθῆς ἀνάγετε οὐκ ἔπι κινδύνῳ

πόδα, ἔφη, καὶ βελούσαδε. ἔ τῶν δὲ αὐτῷ μὴ διαφύγη βε-

λδομένους τὸ πρᾶγμα ἐφ' ἡμῖν κείμενον. ὡς ἡ τούτῳ γε

αὐτῷ ἀπειθεῖν ἠδέσθησαν, εἰς μέσον καταστάς ὁ Ξενοφῶν θου-

μαστούς λόγους διέθετο, ὡς τὸ τελεῖσθαι αὐτοῦ ἐδήλωσεν. (ἔ

τῶν ἡμῖν γε σαφῶς ἐξηκούοντο.) οὗ γουὶ πρὸ μικροῦ διαρ-

πάσειν ἐγνωκότας τὴν πόλιν, μετρίους κατὰ τὴν ἀγορᾶν

ἐωρῶμεν ὠνούμενοις τὰ ἔπιτέδεια, ὡς τῶν ἄλλων βυζαν-

τίων ἕκαστος, καὶ μηδὲν ἐπὶ ἐκείνου τοῦ ἀδίκου καὶ ἀρ-

πακτοῦ ἀρεῖσθαι. αὕτη δὲ ἡ ὄψις, ἔπιδείξισ ἦν

τῆς Ξενοφῶντος ψυχῆς, ὅπως καὶ φρονεῖν καὶ λέγειν

Vertical marginal notes in Greek script on the left side of the page.

Vertical marginal notes in Greek script on the right side of the page.

ΧΙΩΝΟΣ

*in folio 20*

ἠδύατο. ἔ μιν ἔγωγε ἴσυχία τὸν ἄνδρα παρελθεῖν  
non minus alii eu l'uicūi' επέμεινα, (καὶ ταῦτα ὁμοίως βυζαντίοις εὖ πεπονηθὺς ἐπὶ  
αὐτοῦ, ἐπεὶ διὰ τοῦ ἀνέμου καὶ αὐτός ἐστι τῶν διαρ-  
spoliarī contigisset  
absq' eo frūbet me una cum reliquis  
παδησομένων) ἀλλ' ἐγνώρισα αὐτῷ ἐμαυλόν. ὃ ἦ καὶ τῆς  
quodlibet intrepidit cum d'per.  
ρης πρὸς Σωκράτη Φιλίας ἀνεμιμνήσκετο, καὶ μὲ Φίλο-  
hortabat  
σοφεῖν παρίστατο: καὶ τάλλα ἔ βραβωτικῶς, μα δία,  
aliqui d'per.  
ἀλλὰ καὶ πάνυ φιλανθρώπως διελέγετο. νῦν δὲ εἰς Θρά-

Εἰς 7. φαναζοῦσαυ  
 Προσεβ. πάν βαρβάρων  
 Φιλαργυρον.

κίω ἀγει τὸ κράττωμα. Σύθης γὰρ ὁ τῶν Θρακῶν βασιλεὺς  
gna quodam finitimus  
cor ad se accersimus  
amplia d'pendia  
 πρὸς Ἰνας ὁμορους πολεμῶν, μετεπεμψατο, ἐντελή μισθὸν  
pollicitio  
 αὐτοῖς πρόσχομεν: οἳ ἦ ἐπὶ ἠκούσαν. ἔ γὰρ ἀποροι δια-  
loma κελιά  
aliquē laborē fructu  
precepta  
λυθῆναι βούλομαι, ἀλλὰ καὶ κλήσαταί ἡ ἐκ τῶν πόρων,  
anteq' essent dimittat.  
quidam hic h' d' p' suade  
ἕως ἡ ἐπι κράττωμα εἰσίν. ἰσὶ δὴ πολὺ με εἶναι προθυμώ-  
mymisti  
 τερον εἰς ἀθήνας πλυσταῖδα Φιλοσοφῆσαι. μεμνήσαι  
subind.  
 γὰρ δὴ που, ὅτι προτρέπων με συνεχῶς εἰς Φιλοσοφίαν, καὶ  
subit  
 θαυμασὰ διεξιῶν περὶ τῶν καθ' ὅτιου ἀποδρασάντων περὶ  
obq' q' d' h' h'  
 αὐτὴν μέρθ, τάλλα μὲν εἶχεσ πειθόμενον, ἐκεῖνο ἦ καὶ πά-  
ad plūquam uiridit  
 νυ φοβούμενον. ἐδόκει γάρ μοι τὰ μὲν λοιπὰ ὄντως ἀπου-  
quod  
 δαιότερους ποιεῖν, ὅσων ἐφαίφατο. καὶ γὰρ τὸ σῶφρον καὶ  
quidam  
 τὸ δίκαιον οὐκ ἀλλοθεῖ δέξασθαι τοὺς ἀνθρώπους ἢ φιλοσο-  
h' h' h'  
 φίας ἴμεν, τὸ δὲ πρακτικὸν καὶ σφοδρὸν διαλύει τῆς  
ac m'  
 ψυχῆς, καὶ μαλθάσειν εἰς τὸ ἴσυχον. ἀπραγμοσύνη γὰρ  
 ἦν καὶ ἡρεμία, τὰ θαυμασὰ, ὡς μοὶ ἔλεγες, ἐγκώμια Φι-  
 λουσόφων. δεινὸν οὐ μὲν μοι κατεφαίνετο, εἰ φιλοσοφήσας  
 τάλλα μὲν ἀμείνων ἔσομαι, θάρραλέθ ἦ σὺ ἐπί, οὔτε  
es ita, tent  
 βρατιώτης εἶναι δυνήσομαι, οὔτε δέξασθαι, εἰ δέσοι ἀλλὰ  
q' p' d' clauum d' p' n'  
 μεθήσω

Philosophi tranquillita.  
 sem spectat.

*mō γὰρ*  
*mō h' h' h'*  
*quid d' h'*  
*h' h' h'*  
*causa*

*habebat*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*

*mymisti*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*

*quod*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*

*si tū*  
*causa*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*  
*h' h' h'*

his oib. valedidung effe.

**ΧΙΩΝΟΣ**

<sup>adducenſe oblivione</sup> <sup>incantatione quada ois experit</sup>  
 μεθήσω πάντα ταῦτα, ὡπερ σπιλήσμονι λινεῖ ἐπωδῆ πάντος  
<sup>facinori</sup> <sup>delinib</sup> <sup>ignorab</sup>  
ἔργα λαμπροτέρη κληθείς τῆ φιλοσοφία. ἠγνοον δ' ἄρα,  
<sup>non x sympocriti</sup> <sup>μεcum</sup> **Π**  
ὅτι καὶ πρὸς ἀνδρίαν εἰσιν ἀμείνους οἱ φιλοσοφῆσαιες: καὶ  
<sup>non x sympocriti</sup> <sup>me cum</sup>  
μόλις γε αὐτὸ παραξυνοσῶν ἔμαθον, ὅτι ἐπειδὴ δε-  
<sup>ca de n sabuerit</sup> <sup>sum xps falsis</sup> <sup>habitu x</sup> <sup>sciam</sup> <sup>qualis</sup>  
λεχθη μοι περὶ αὐτοῦ, ἀλλ' ἐπει τοιούτων ἐφάνη, οἷός  
<sup>cum n simio</sup> <sup>sciam</sup> <sup>sciam</sup> <sup>sciam</sup> <sup>sciam</sup> <sup>sciam</sup>  
εἶ. μάλις γὰρ δὴ μεταχόνων τῶν Σωκράτους λόγων, δεχέ  
<sup>salubris</sup> <sup>ferenda</sup> <sup>reddidit</sup>  
πρατόματα καὶ πόλεις σώζειν, καὶ εἴδεν αὐτὸν ἐποίησε φιλο-  
<sup>nibi</sup> <sup>uel</sup> <sup>amius</sup> <sup>mutili</sup> <sup>oie</sup>  
σοφία αὐτὰ τε καὶ τοῖς φίλοις ἀχρηστότερον. ἡσυχία μὲν οὐκ  
<sup>amot</sup> <sup>ad</sup> <sup>quariter</sup> <sup>xi</sup> <sup>sciam</sup> <sup>ido</sup>  
πεινηχωτέρα τάχα δὲ δαιμονίας: ἦδη μὲν τοι καὶ πράξει  
<sup>non</sup> <sup>futurus</sup> <sup>est</sup> <sup>quieta</sup> <sup>vita</sup> <sup>ni</sup> <sup>pro</sup>  
καλῶς εἰς αὐτὰ, ὁ καλῶς ἡρεμεῖν δυνάμενος: ἐπὶ καὶ μεί-  
<sup>et</sup> <sup>de</sup> <sup>belius</sup> <sup>xo</sup> <sup>vacat</sup> <sup>anantia</sup> <sup>cupiditola</sup>  
ζῶν αὐτῆ εἰς τοῦ πολέμου ἕως ἴσχυαν καὶ ἀπιθυμίαν καὶ  
<sup>modis</sup> <sup>ai</sup> <sup>supre</sup> <sup>hinc</sup>  
τάλλα πάθη χεῖρουμένη, ὡς καὶ οἱ νικῶντες τοὺς πολέμους  
<sup>vinc</sup> <sup>sciam</sup>  
ἠπώσθη. καὶ γὰρ οὐκ ἐλπίζω φιλοσοφῆσαι, τά, γε ἄλλα  
<sup>non</sup> <sup>minus</sup> <sup>fortit</sup> <sup>hinc</sup> <sup>habitu</sup> <sup>audacia</sup> <sup>qde</sup> <sup>iste</sup>  
κρείττων εἶσεσθαι, καὶ εἴδεν ἠπῶν ἀνδρείως, ἀλλ' ἠπῶν ἰσχυ-  
<sup>re</sup> <sup>sufficere</sup>  
σύς. ταῦτα μὲν οὐκ εἶς τοῦ κἀνοῦ μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῦ πά-  
<sup>ad nauigatorem</sup> <sup>causis</sup>  
νυ πέρα. γίνωσκε δέ με ἠδὴ πρὸς τὸ πλεῖν ὄντα. καὶ γὰρ  
<sup>magis</sup> <sup>sciam</sup>  
δὴ γέγονε καὶ τὰ τῶν ἀνέμων αἰσιώτερα.

*Scisum vincere victoria*  
*est vera.*

**IV. Τῶ αὐτῶ.**

Επιτυχόντες τῶν πρὸς σίμον καὶ ἐμπορίαν ὡς ὑμᾶς  
 πλεοντῆ, ἔγνωμεν καὶ τὰ ἐν περιθῶ στυτυχόντα δηλῶσαι.  
 καὶ γὰρ ἐρίφων ἐσπερία δύστις. καὶ γὰρ προέλεγον τοῖς ἐν  
 ἡμῖν ναύταις ἐπιγαίν τον ἐκπλοῖον, καὶ ταῦτα ἐν βυζαντίῳ  
 διατρέβειν δυναμένοι: οἱ δ' ἐπείθοντο, ἀλλὰ καὶ πάνυ  
 μου πλὴν πρόσρησιν ἐχλεύασαν, προβεβλήσάν μοι νόσον ὑπὸ  
ἀσπρονομίας ὑπὸ δεχεδῆμου ἔ ἀσπρόμου λέγοντες: καὶ γὰρ  
 μέτρι μὲν ἔντ' ἀντείχον, κάλανα μαχοῦμεν δ' ὑπὸ

*sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam*

*Archedemus.*

*sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam*

*sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam* *sciam*



αὐτῶν εἶξα, καὶ ταῦτα, ἔδὲ αὐτὸς εἰδὼς, ἐπὶ ἀληθῆς αὐ-  
 τοῖς προλέγομι: ἄμα δὲ πνεῦμα οὐριον, καὶ καλὸς πλοῦς  
 προσφαινόμεν, ἀπιστοτέρα μου ἐποιεῖ τὰ προαγορεύμα-  
 τα. ὡς δὲ ἀνήχθημεν, ἕως μὲν συλληθρίαν παραπλάζα,  
 κατεγελώμην ἐφ' οἷς προεῖπεν, ἔρχομένους καὶ μέγρι τῆς  
ἀποβάσεως γελάω. ὡς δὲ τριάκοντά που σταδίους ἀπ' αὐ-  
 τῆς προεκοψαμεν, θεινὸς ἡμᾶς χειμῶν κατέλαβε, καὶ πο-  
 λὺ μὲν χρόνον ἔδαμον καθορμίσαι τὴν ναυὴν δυνάμενοι,  
 πονήρως πάνυ διεκείμεθα. μόλις δὲ ποτε ἐπιδόντες τὴν  
 πέρινθον, ἐβιαζόμεθα πρὸς αὐτὴν, κωπηλάται ἀγαθοὶ  
 γρόμενοι. τοῖς μὲν γὰρ ἰσίοις οὐ φορητὸς ἦν ὁ αἴεμα,  
 καὶ θεινὰ παθόντες, ἵνα μὴ λέγω τὰ μετὰξυ, μέσων που  
 νυκτῶν κατήχθημεν εἰς πέρινθον. καὶ τότε μὲν κατεδά-  
ρουμεν. ὑπελείπετο δὲ ὑμῖν καὶ ἕτερον χειμῶν ἔδεν τοῦ  
 θαλατῆου μετριώτερον. πέρινθιοι γὰρ ὑπὸ θρακῶν ἐπο-  
 λεμοῦντο: καὶ τοῦτο οἱ πάντα ἀγνοήσαντες ἡμεῖς εὖ ἐπυ-  
 θόμεθα, καὶ περ δώδεκα ἡμέρας ἐν βυζαντίῳ διατεί-  
 φαντες: ἀλλ', ὡς εἶκος, αἰφνίδι ἢ καταδρομῇ τῶν  
 βαρβάρων ἐχρήετο. ἀναστάντες οὐκ ἐξήκειμεν ὀψόμενοι τὴν  
 πόλιν, ὡς ὤμεθα, ἐγὼ τε καὶ ἡρακλείδης, καὶ ἀγάθων ὁ  
 χρηστὸς. εἶποντο δὲ ἡμῖν καὶ τῶν θεραπόντων βαίτυλ,  
 καὶ ποδάρης, καὶ φίλων ὁ θρασὺς: ἡμεῖς μὲν ἀνοσχοί:  
τῶν δὲ θεραπόντων παρήρητο ἐκάστῳ μάχαιρα. φίλων  
 μὲν γὰρ καὶ δόρυ ἐκόμιζε. μικρὸν δὲ προσελθόντες ἀπὸ τοῦ  
 λιμένου, ὄρωμεν στρατόπεδόν τε οὐ πρόσω τῆς πόλεως:  
 καὶ τὸ θεινότερον, ἰππέας τρεῖς οὐ πόρρω ἡμῶν: καὶ φί-  
 λων

*ut mihi habent  
fidei  
in altu venim*

*u/hi du d/lon  
ἐννεμυ δ/ρ/αν  
-αγγαλλεω*

*Vi ai e  
g/lonim*

*10m a/ri*

*4/μ/αν  
no d/μ/αν*

*αγγαλλεω  
/u/nu*

*βον/α*

*καταδρομῇ  
αὐτῶν*

*πρασι/α  
δὴ θ/αν  
δ'ε/αν  
π/μ/αν*

*δ/μ/αν  
δ/μ/αν*

*ο γ/μ/αν  
ι/μ/αν*

*κα/μ/αν*

*κα/μ/αν*

*κα/μ/αν*

*αγαθῶ  
κα/μ/αν  
α/μ/αν  
α/μ/αν*

*κα/μ/αν  
α/μ/αν  
α/μ/αν*

*α/μ/αν*



ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

Φιλάων μὲν δούς μοι τὴν λόγχην, ἴν' αὐτὸς ἦ δρομικώτερος.  
ἔπειτα τὴν ναυὴν ἔφλυγον: ἐγὼ δὲ σὺν ἐλπίδων ὠκύτερον ἵπ-  
λωθ' αὐτῶν ἐμαυτὸν εἶναι, ὡς τὸν βραχίονα ἐλιπῶν δοιμάτιον ἢ  
τὴν λόγχην διηκυλώμενον ἔμενον: τὸ αὐτὸ δὲ ἐποίησάν  
καὶ οἱ θεράποντες. ἡρακλείδης δὲ καὶ ἀγάθων λίθους ἔ-  
χοντες ὀπίσω ἡμῶν ἐκρύπτοντο. προσελάσαντες δὲ οἱ  
ἄλλοι θράκες πρὶν εἰς ἔφικτὸν ἐλθεῖν ἠκόντισαν τρεῖς λόγχας  
καὶ ἅμα. καὶ αἱ μὲν, μικρὸν πρὸ ἡμῶν ἔπεσον. οἱ δὲ  
καὶ ἠέρινασπρέφαντες, ὡς δὴ τετελεσμένου αὐτοῖς τοῦ ἔργου, ἦ-  
λαντον εἰς τὸ στρατόπεδον. ἀνελόμενοι οὖν ἡμεῖς τὰς λόγ-  
χας, ἀνεχωρήσαμεν ἔπειτα τὴν ναυὴν, καὶ λύσαντες τὰ ἀπό-  
γεια ἐπώλεμεν. νυκτὶ δ' ἐν χίῳ ἐσμέν, πάνυ θηλεκῶς τῶν  
ἀνέμων ἡμῖν ὡς πάντα τὸν πλοῦν χρησαμένων. λέγε  
οὖν δεχθεδήμων, ὅτι ἐρίφων ἐσπερία δύσις ἔκατὰ θά-  
λατταν μόνον σημαίνει χαλεποὺς χειμῶνας, ἀλλὰ καὶ  
καὶ γλυχαλεπωτέρους. ἔχεις γὰρ ἐκ τῆς ἡμετέρας σωτυ-  
χίας παύσαι πρὸς αὐτόν.

Τῷ αὐτῷ.

Ἀφίγμεθα εἰς ἀθλιώτας, καὶ πλάττωνι τῷ σωκράτους  
γνωρίμῳ διαλεγόμεθα. τὰλλά τε πάντα σοφὸς ἀνὴρ ἐστὶ, καὶ  
καὶ τὴν φιλοσοφίαν σὺν ἀπείρητον ἔργῳ τοῖς γνωρίμοις  
ποιεῖ, ἀλλὰ καὶ πάνυ ἀμφοβῆ, πρὸς τε τὸ πρακτικὸν τοῦ βίαι  
καὶ πρὸς ἡσυχίαν ἀπεράγμονα. ἔγραφες δέ μοι καὶ ὡς τῆς  
σῆς πρὸς αὐτὸν φιλίας, ὅτι ἔ μικρὸν πλεονέκτημα τὴν πρὸς  
σωκράτη σὺ σωθήθειαν εἰς αὐτὸν ἔχοιμι. ἴσθι οὖν ὅτι πάντων  
μὲν ποιεῖ λόγον, καὶ τὴν μίαν ἡμέραν ὁμιλησάντων σωκράτης:

ἡ ἀπὸ  
κακῶν.

B 2  
quod hanc...  
facit...  
facit...  
facit...  
facit...

Handwritten notes in the right margin, including 'Αἱ στίχοι 2. εἰρη...', 'ἀνδρῶν ἐν...', 'ὡς τὸν βραχίονα...', 'ἔχεις γὰρ...', 'πρὸς αὐτόν...', 'ἡμετέρας...', 'σωτυχίας...', 'ἀθλιώτας...', 'πλάττωνι...', 'γνωρίμῳ...', 'διαλεγόμεθα...', 'τὰλλά τε...', 'πάντα σοφὸς...', 'ἀνὴρ ἐστὶ...', 'καὶ τὴν...', 'φιλοσοφίαν...', 'σὺν ἀπείρητον...', 'ἔργῳ τοῖς...', 'γνωρίμοις...', 'ποιεῖ...', 'ἀλλὰ καὶ...', 'πάνυ ἀμφοβῆ...', 'πρὸς τε...', 'τὸ πρακτικὸν...', 'τοῦ βίαι', 'καὶ πρὸς...', 'ἡσυχίαν...', 'ἀπεράγμονα.', 'ἔγραφες...', 'δέ μοι καὶ...', 'ὡς τῆς...', 'σῆς πρὸς...', 'αὐτὸν φιλίας', 'ὅτι ἔ...', 'μικρὸν πλεονέκτημα...', 'τὴν πρὸς...', 'σωκράτη σὺ...', 'σωθήθειαν...', 'εἰς αὐτὸν...', 'ἔχοιμι.', 'ἴσθι οὖν...', 'ὅτι πάντων...', 'μὲν ποιεῖ...', 'λόγον, καὶ...', 'τὴν μίαν...', 'ἡμέραν...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης:'.  
Other notes include 'ἡμεῖς...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης...', 'ἡμεῖς...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης:'.  
A small '5' is written in the right margin.

Handwritten notes in the left margin, including 'ἡμεῖς...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης...', 'ἡμεῖς...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης:'.  
Other notes include 'ἡμεῖς...', 'ὁμιλησάντων...', 'σωκράτης:'.  
A small '5' is written in the left margin.



ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

ἔδενι δ' οὕτως αὐτὸν οἰκειοῖ, ὡς τῷ μάλιστ' ἀπολαύειν αὐ-  
τοῦ διαμένον. καὶ καὶ τὸ το γού ἐσπουδάκαμεν μὴ μειο-  
νεκτεῖν τῆς πλάτων Φιλίας: ἀλλ' ἐν τούτοις τετάχθαι,  
ὑφ' ὧν εὐ παρῆεν φησὶν, εἰτι αὐτοὺς εὐ ποιῆεν διῶλαι. ἔ  
ἦτιονα φιδαιμονίαν εἶναι λέγει, τὸ ἀγαθοὺς ποιῆεν τοῦ  
ἀγαθὸν γινεσθαι. τὸ μὲν οὖν ὠφελείῳ τοῖς διωμομένοις τ  
Φιλῶν αὐτοὺς παρέχει: τὸ δ' ὠφελῆεν, ἔχ ἦτιον λαμβάνει  
παρὰ τῶν ὠφελείῳ διαμένωνων.

Τῷ αὐτῷ. Ἐκόμισέ μοι φαίδιμοι παρικοδ ροδιαν, καὶ μέλιτ'  
ἀμφορέας πέντε, καὶ τοῦ μερσίτου οἴνου κεράμια ἑκοσι, καὶ  
πρὸς τούτοις τρία δεγυρῖα τάλαντα: καὶ τῆς μὲν πίστεως  
ἐκείνον ἐπαινῶ, τῆς δὲ ἰπιμελείας σὲ ἰπιγινώσκω. ἦδη  
μὲν τοῖ τῶν ἰπιχωρίων γνημάτων ὡπτερ ἀπαρχὰς βελόι-  
μιω ἂν σε ἀποσέλλειν, εἶγε ἰπιτρέποι ὁ καιρὸς. τούτοις δὲ  
καὶ οὗ ἄλλους φίλους τέρπειν ἔνεσι, καὶ πλάτων σοφί-  
ζουσα ἀδαροδόκητον ὄντα. χρημάτων δὲ ἔδδ' εἰς ἔμοιγε  
πόθ', καὶ μάλιστ' ἐν ἀθλίαις τὸ ὄνη, καὶ πλάτωνι δια-  
λεγομένῳ: ἐπεὶ καὶ ἄτοπον ἴσως πεπλοκέναι μὲν ἡμᾶς  
εἰς τὴν ἑλλάδα, ἵνα ἦτιον φιλοχρηματοῖ γρῶμεθα: μηδὲν  
δὲ ἦτιον, καὶ ἐκ πόνιζ πλεῖν πρὸς ἡμᾶς τὴν φιλοπραγμο-  
σύλω. χαριέστερον οὖν ποιήσεις ταῦτα πέμπων, ὅσοι τῆς  
πατρίδ' ἡμᾶς, ἔχ ὅσα πλούτου ἀναμνήσει.

Τῷ αὐτῷ.

Ἀρχέπολις λήμνι μὲν ἐπὶν, ὡς λέγει, τὸ γού.  
Φαῦλ δὲ καὶ ἀτέκμαρτ' ἀνθρωπ', καὶ σασιασῆς  
πρὸς  
καὶ ἡμῶν. Ἡδρωπος ὄντις ἄστα  
μηδὲν τοῦ πλούτου ἀναμνήσει.

Handwritten marginal notes in Greek script, including names like 'Πλάτων' and 'Ἐπίστολοι'.

Handwritten marginal notes in Greek script, including names like 'Ἐπίστολοι' and 'Ἐπίστολοι'.



ΧΙΩΝΟΣ.

γράφω ἐν ταύτῃ βιβλίῳ

περὶ πάντας, μάλιστὰ δὲ πάντων περὶ εἰαυτόν: σὺ δὲ τοῦ-  
 τοις καὶ λελυμένοι τῷ ἀποπολιζίαν: καὶ πάν, ὃ ἀὐ οἴη-  
 Δείη, λέγων, νοεὶ δὲ αἰετὰ μαρτυρεῖται. ἔτῳ τὸ μὲν πρῶτον,  
 ὡς πυνθαγόμα, Ἐμιάς τε ἐν λήμνω γρόμεν, καὶ τὰς  
 ὁμοίαις μελιῶν ἀρχαί, σὺν ὑπερπῶς ἀπώθειτο. ὡς δὲ ἔ-  
 δοξα αὐτῷ καταφρονῆσαι ἢ φιλοσοφίας, εἰς ἀθυρίας κα-  
 τέπλωσε, καὶ καὶ πολλὰ μὲν πλάτωνι δυσήρησε: πηλά  
 δὲ εἰς ἡμᾶς ἐβλασφήμησεν. ἐδὲν γὰρ αὐτῷ χησιμοὶ ἐ-  
 φαινόμεθα, περὶ ἀρετῆς, ἀλλ' ἔπει χημαλομοδὸς τὰς δια-  
 λέξεις πιούμενοι. νῦν δὲ εἰς τὸν πόντον ἐμπορεύεσθαι φη-  
 σιν, ὥστε ἀφρόνως: εἰ δὲ τοῦτο μόνον ἐαυτῷ προσήκειν λελό-  
 γισαι: ἀλλὰ τὸ ἀσαθέμητον αὐτοῦ ἢ χησιμὸν ἔδ' αὐτῷ  
 ἵπιδεχέσθαι τῷ φρόνησιν, ἵνα, ὅστε εἰσιν, εἰδῆ, καὶ εἰς ὃ  
 χησιμῳ. περὶ τὸ αἰετὰ φανταζόμενον μετεωρίζεται.  
 οὗτῳ ἵπιδεχόμενῳ τῶν βλασφημιῶν, προσήλθε μοι καὶ  
 ἔδ' ἐθη, σὺ γράψαι περὶ αὐτοῦ. ἐγὼ ἢ ἐκείνω μὲν, ἵνα μη  
 ἀνάξιω ὄντι βελλεροφόνῳ ἔχημα πείθω, ἕτεραν ἵπιστολιῶ  
 ἔδωκα, ἐδὲ ἐκεῖ τὴ ὁμοίως ψιδάμεν. τῷτῳ ἢ προσ-  
 ναγομένω λύσιδι ἐνεχειρισαι. οἶμαι δὲ πάση φιλανθρωπίᾳ  
 δέξασθαι σε δεινὸν τὸν ἀνθρώπον. καὶ εἰπεῖν ἵπιδὲ τέλει, ὅτι  
 οὕτως ἀμάβεσαι χίων ὅν βλασφημήσαντας. τοῦτο γὰρ ἐν  
 ἐπὶ τῶν μαθημάτων αὐτοῦ, αἶ σὺ ἐχλάσθαι, τὸ μηδένα  
 κακὸν ἀμυνέσθαι μέγχι τοῦ μη αὐτῶν αγαθὸν εἶναι: τοῦτο ἢ  
 ἔσαι, εἰὰ δὲ ποιαις αὐτοῦ ἀμυνώμεθα. οἶδα μὲν οὐδ', ὅτι  
 ἐδὲν πείσεισαι ἀπρωτῳ ὦν τῷ ψυχῶν ὑπὸ μαρίας: ὅ-  
 μως δὲ οὐδ' ἡμῶν αὐτὴ χάριν, γνέσθω τοῦτο τὸ πολιτεύμα.

ἔθηκεν 8-9.  
 καὶ ἴσ φιλῆν εἰσάγει.  
 Ἰδούτωρ δὲ ἡμῶν ὄγμ.  
 καὶ ἴσ φιλῆν εἰσάγει.  
 καὶ ἴσ φιλῆν εἰσάγει.

ὅτι κοινὴ  
 ἡ μνήμη  
 οὐδέ τί  
 ἕως  
 ἠὲ  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη

ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη  
 ἡ μνήμη

B 3  
 Vid. an preferenda sunt sine  
 ad fronde. Βελλεροφόνος  
 γραμματὰ. Et ad Plaut. Bacch. sc. Condungit:  
 Bellerophonem jam hinc me fecit filium  
 Ego met tabellais detuli ut vincerem. p.

καὶ ἴσ φιλῆν εἰσάγει  
 καὶ ἴσ φιλῆν εἰσάγει

ἡ ἀρετὴ ἀποδοῦναι ἀλλοῦ  
ἀρετὴ ἢ ἡ  
Συνοχὴ δὲ ἡ

τὸ ἴδιον αὐτὸς λελυμένως καὶ ἀπροκαλύπτως ἐδήλωσα,  
πρὸς ἄλλον μὲν ἔδεν βλασφημίας τῶν ὄντων οὐδένα,  
πρὸς σέ ἴδιον, τὴν ἐμὸν νοῦν ὑπὸ μηδενὸς παραμπεχόμενον  
λόγον, ἀποδοῦναι ἢ σαφῆ δικαίων εἶναι.

Τῷ αὐτῷ. VIII.

8.

Ὁ δὲ ἀποδοῦναι σοὶ τὰ γράμματα Ἀρχέπλις ὁ λήμιος  
ἐμποροῦμενος εἰς τὸν πόρον ἐδείθη μου, ὅπως αὐτὸν συ-  
στήσαιμί σοι. ἐγὼ δὲ ἄσμενος ἐδέξάμην. καὶ γὰρ οὐδέ  
Φίλος μοι ὡς ἐτύχανε. κέρδος οὐ μέγα αἰθήλω, ἀ-  
φορμῶ λαβεῖν τὸ παιῖσάϊ ἵνα φίλον μὴ ὄντα πρότερον.  
εἰς ὃ κέρδος συλλήψῃ μοι καὶ σὺ, φιλανθρώπως αὐτὸν  
εἰσδεξάμενος. πείθομαι δὲ καὶ μέτριον ἔμπορον εἶναι. καὶ  
γὰρ φιλοσοφῆσαις πρότερον, εἴτα ἐμποροῦναι βίωσι.

ἐν τῷ  
ἐν τῷ  
ἐν τῷ  
ἐν τῷ

βίωσι. IX.

ὁ δὲ ὀλιγωρῶν ἡ ἀρετὴ  
ὁ δὲ ὀλιγωρῶν ἡ ἀρετὴ  
ὁ δὲ ὀλιγωρῶν ἡ ἀρετὴ  
ὁ δὲ ὀλιγωρῶν ἡ ἀρετὴ

Ὀλιγωρῶν μὲν σου τῷ αὐτῷ πάλιν ἐμὸς ὅτι αὐτὸς ἤλπισα  
ἔσεσθαι, οὐτε ἐβουλόμην προσδέξασθαι. θαυμάζω δὲ τὴν  
συντυχίαν, δι' ἣν ἔδεν τέως ἤκει μοι παρὰ σοῦ γράμμα:  
καὶ περὶ συνεχῶς γραφόντων ἄλλων. ὑπερ μὲν οὐ τῶν  
ἠρομένων ἐγὼ αὐτὸς ὑπερ σοῦ ἀπολογίσσομαι: τὸ ἴδιον,  
εἴτε οἱ μὴ ἀποδιδόντες αἴτιοι γέγονασιν, φύλαξαι τὸ τοιοῦτον  
συνεχῶς γράφειν. οὕτω γὰρ καὶ τῶν ἀποδιδόντων ἴσχυρῶς.  
εἴτε σὺ μὴ γράφῃς, φύλαξαι καὶ τὸ τοιοῦτον. ῥαδίᾳ δὲ εἰς αὐ-  
τὸν τοῦ φυλακῆ. καὶ τοι γὰρ τῆ ἡμετέρα φιλία τοσοῦτον,  
ὅσον καὶ τὰ δυσχερῆ νικᾶν διώκοντα. ἢ ἴσχυρῶς τοῦ ἡ-  
ραίου καὶ τοῦ καλλιχόρου καὶ τῶν παρὰ καλλιθένης διατρι-  
βῶν, καὶ ὅσοις ἄλλοις τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς ἐκεράσαμεν; ἢ αὐ-  
τὸς μὲν ὅτι ἴσχυρῶς, ἐμὲ δὲ φιλοσοφίας γαστρίμηνον

ἐπενοῦν  
ἐπενοῦν  
ἐπενοῦν  
ἐπενοῦν

ἐπενοῦν ἢ ἡ  
ἐπενοῦν ἢ ἡ



ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

ἀμνημονεῖν αὐτὰν ὑπολαμβάνεις; ἀλλ' οὐ προσήκει σοὶ  
οὔτε αὐτὸ φαύλως ἔχειν περὶ τῆς Φιλίας, οὔτε περὶ ἐμοῦ  
φαῦλα εἰκάζειν: ἀλλὰ καὶ ὡς μεμνημένον αὐτῆς, καὶ ὡς  
μεμνημένῳ γράφειν σιωχεσέτερον.

Ματρίδι. Χ.

Πλάτωνι ἀδελφιδῶν θυγατέρες εἰσὶ τέσσαρες. τούτων  
τῆς πρεσβυτάτης ἐδίδου ἀποσίπω πρὸς γάμον καὶ με-  
τριαν προῖκα τριάκοντα μνᾶς. ἐπετόμφει δὲ αὐτῇ ταύτας

διούσι. ἐγὼ οὐκ ἀσπασθὸν ἡγησάμενος τὸν καιρὸν, πάλαντον προσετίθω τῇ προικί. καὶ μέχρι μὲν πολλοῦ ἤνεκα  
νετο: ἐξεπολιόρησα μὲν δι' αὐτὸν πάντῃ ἀληθείῃ καὶ δικαίῳ  
λόγῳ. ἔφαμεν γὰρ, ὅτι οὐκ εἰς πλοῦτον, εἰς δὲ Φιλανθρωπίας

οὐκ εἰς συμβαλλόμεθα: τὰς δὲ τοιαύτας δωρεὰς δέχεσθαι  
δεῖ. αὐτὴ γὰρ τιμὰς αὐξήσει, αἱ δὲ ἄλλαι ἀτιμάζουσι. τιμὰς  
μὲν οὐκ εἰς Φιλανθρωπίαν: ἀτιμάζουσι δὲ πλοῦτον. ἤρμος αὖτε  
καὶ τὰς ἄλλας παῖδας ἤδη τοῖς χαριεσάτοις ἀθήνησιν: ἀλλ'  
οἱ μὲν πλοῦτοισι, ἀποσίπω δὲ καριέσερ ὧν πένε. γούτων  
τοῦτο οὐκ τὸ κέρδι ὡήθην δηλώσαι σοι: ἔμειζον ἡμῖν  
οὐκ οἶδ' εἴτι περιγνέσθαι ἐν παντὶ τῷ βίῳ διῶα.

Τῷ αὐτῷ. ΧΙ.

Εκομισάμενος παρὰ βιάνορος τῆς Ἰππολύτου, ἐν ἣ

με ἀνακομίζεσθαι παρεκάλες: ἰκανὸν γὰρ εἶναι πρὸς ἡντι-  
νοῦ ἀποδημίαν πέντε ἐταῖν χρόνον: ἔκτου δὲ τῆς ἐμῆς ξε-  
νιτίας ἀρχεῖσθαι. ἐμὲ δὲ ὅσῳ μὲν πόθῳ ἔχει καὶ ὑμῶν  
καὶ τῆς πατρίδος, αὐτὸ σαφῶς ἴσθαι. εἴοικε δὲ οὐκ αὐτὸς ἔτος  
ὁ πόθῳ καὶ βιάζεσθαι με πλείω χρόνον διατρέχειν ἀθλήσειν.  
ἄφελιμώτερόν γὰρ εἶναι ἢ συμπαθεῖν βούλομαι. τοῦτο δὲ τὸ

ἔστι μοι ἰσχυρὸν ἔλεος. Ἡσυχία ἐστὶν ἡμῶν οὐκ ἔστιν  
ἔτι γὰρ ἡμῶν. Ἡσυχία ἐστὶν ἡμῶν οὐκ ἔστιν  
ἔτι γὰρ ἡμῶν.

Handwritten marginal notes on the left side of the page, including fragments of text and symbols.

Handwritten marginal notes on the right side of the page, including fragments of text and symbols.

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

κράτῳ μόνῃ ἔχει φιλοσοφία. πενταετής ἢ χρόνῳ, ὡς  
 πᾶτες, ἔχ' ὅπως φιλοσοφοῦσιν ἀπαρκεῖν ἔμοιγε φαίνεσθαι,  
 ἀλλ' ἔδὲ τοῖς ἐμπορευομένοις ὀπιμελέστερον: καὶ τοιγε οἱ  
 μὲν ὀπι τὰ βτελέστερα σέλλονται, ἡμῶς δὲ δρετῶ ἐμπο-  
 ρδόμεθα, ἔδενὸς ἄλλῃ, πλὴν φύσεως, καὶ φιλοπονίας, καὶ  
 χρόνου ὄνιον: ὡν τὰ μὲν ἔ παντελῶς ἡμῶν ἀπλείπειται:  
 χρόνος μὲν τοι δέόμεθα. διατρέψαντες ἢ τῶ ἄλλῳ πεν-  
 ταετίαν ἀνασπείρομεν θεοῦ γε σώζοντῳ. σὲ δὲ, ὡς λο-  
 γισμῶ ἐκπέμπων ἡμῶς ὑπέμενες, τούτῳ χρόνῳ καὶ χρόνῳ  
 ζόντων μὴ ἀχθεσθαι: καὶ ταῦτα εἰδόντα, ὡς ἔχῃ τὸ ἐκπλεῖ-  
 σαι ὀπι παιδείαν ἀγαθοῦς ποιῆ: τὴ ἢ χροῖσαι πρὸ παι-  
 δείαν σπουδάζοντα.  
 τῷ αὐτῷ.

Πρὸς τὸν ἀδελφόν  
 Ζω. ὡς ἔγραψας  
 ἐπιστ. -  
 ποῖνι ἐπὶ τῶν  
 ἀφ' ἑσῶ  
 ἐπὶ τῶν ἀφ' ἑσῶ.

οἱ μὲν  
 ζόντων  
 ἀχθεσθαι

ἡμῶς  
 εἶναι  
 ὀπι τῶν  
 ἀφ' ἑσῶ

Πρότερον μὲν ὡς περ ἔγραφον δεκαετίαν ἐκπληρώ-  
 σας, οὕτως ἐπανέρχεσθαι πρὸς ὑμᾶς ἐβουλόμην: νῦν δὲ ἀ-  
 κούσας τῶν τυραννίδων, ὅσα αὖ ἐπι ὑπομείναιμι ἐν ἀσφα-  
 λεσέρω τῶν πολιτῶν εἶναι, ἀλλ' ἢ αὖ ἀρξῆ τὸ ἔαρ πλο-  
 σῦμα, θεοῦ σώζοντῳ. νῦν μὲν γὰρ μεσοῦντῳ ἔτι τοῦ  
 χειμῶντῳ, ὅσα ἐδωάμην: ὀπι καὶ τελέως ἀποπν, ὁμοίως  
 ἡμῶς εἶναι, τῶς ἐπειδάνη ταραχθῆ, τῆς πατρίδῳ ἀπο-  
 δράσκουσιν, ὀπι τύχοι, ἀλλὰ μὴ τῶτε μάλιστα παρεῖναι,  
 ὅτε ἀνδρῶν ὠφελήσόντων δεῖται, εἰ δὲ καὶ παντάπασιν ἐν  
 ἀδωάτῳ εἴη τὸ ὠφελεῖν, τὸ γοῦν μετέχειν βλάβης ἐόν-  
 τα, δρετῆ μὲν παραπλήσιά μοι δοκεῖ: χάρις δὲ ἴσως ἐν-  
 δεστέρα. θαρραλεώτερον δὲ σοι γέγραφα, ὀπι καὶ λύσις  
 τῶν ὀπισθῶν ἐκόμισεν.  
 τῷ αὐτῷ.

ἀρξῆ  
 πλο-  
 σῦμα  
 ἀποπν  
 ὁμοίως  
 ἀπο-  
 δράσκουσιν  
 ὀπι  
 ἀνδρῶν  
 ὠφελήσόντων  
 δεῖται  
 ἐόν-  
 τα  
 δρετῆ  
 ἴσως  
 ἐν-  
 δεστέρα  
 γέγραφα  
 ὀπι  
 λύσις  
 ἐκόμισεν

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

Τῷ αὐτῷ.

Οὕτως κλέαρχος ὡς μοι ἔγραφε, ἔχ' οὕτω σειλη-  
 γὸν δέδοικε <sup>off. eferent</sup> κατελιηφότα αὐτοῦ τὸ Φρουριον, ὡς ἡμᾶς Φι-  
 λοσοφουῖτας. Ἰπ' ἐκείνον μὲν γε οὐκ ἐπέσειλε τέως οὐ-  
<sup>illam offragantem.</sup> <sup>ut audis</sup> <sup>scm</sup>  
<sup>Pauli post</sup> <sup>quasi hoc</sup>  
<sup>me adverb. sunt</sup> <sup>satiz me resuscitantem.</sup>  
<sup>quasi hoc</sup> <sup>ex improviso.</sup>  
<sup>inquit.</sup> <sup>substant. in m.</sup> <sup>cap.</sup>  
<sup>si can</sup> <sup>malé corr. dicitur</sup>  
<sup>4. terrestris</sup>  
<sup>calicib. betis</sup> <sup>confortuque</sup>  
<sup>nuinys accipit</sup> <sup>cum decipit</sup>  
<sup>augur</sup> <sup>in tergum</sup>  
<sup>rei meae</sup>  
<sup>geramus</sup>

πολιορκησονίας, ὡς πωθάνομαι: ἐπ' ἐμὲ ἢ ἢ κέ τις θραξ  
 δόρυφορος αὐτοῦ γυόμενος. ἔγνων γὰρ μετὰ ταῦτα, καὶ  
 μικρὸν ὑπερον ἢ γράφω αἰ σοι τὴν περὶ τῆς νόσου παρ'  
 ἡμῶν Ἰπιστολίω, ἐπεχειρησεν (ἀνειληφέν) ἑμαυτὴν ἰκα-  
 νῶς ἤδη) καὶ μοι περὶ ἐκτὴν ὥραν μόνω πειπατοῦπι ἐν  
 τῷ ᾠδείω καὶ περὶ τὴν σκέμμα Φροντίζοντι, αἰφνι-  
 δίως προσήεν. ἐγὼ δὲ δὲ θέως μὲν ἐπένοησα, ὡς περὶ ἡ.  
 ὡς δὲ ἐξιδιόν τι ὄρω κακῶς μεταλαμβάνοντα, βοήσας, αὐ-  
 τήντε ἐξέπληξα, προσδραμὼν τὴν δεξιὰν αὐτοῦ μετε-  
 λιηφότα ἤδη τὸ ἐγχειρίδιον καταλαμβάνω, καὶ τὸ λοιπὸν  
 δὴ λακτίζων, καὶ φειαγνύων τὴν βραχίονα ἐξέβαλον αὐτοῦ  
 τὸ ξίφος, καὶ ἐτρώθην μὲν κατενεχθέντι αὐτοῦ ἵπτι τὸν  
 πόδα, οὐ χαλεπῶς δὲ ὄμας. ἐκ τούτου δὴ ἰλιγγιῶντα ἔ-  
 δησα τῷ ἰδίῳ ζώματι ἀποσείψας εἰς τὴν πίσω τῷ χεῖρε, καὶ  
 πρὸς οὐκ ἔρατηγούς ἀγω. καὶ κείνῳ μὲν ἔπσε δίκην:  
 ἐγὼ δὲ ἐδὲν δειλότερον εἰς τὸν πλοῦν γέγονα, ἀλλὰ τὸ  
 ἐτησίων παυσαμένων, ὅπως αὐτὸν ἔχω, πλῆσομαι. ἀποπον  
 γὰρ τυραννομένης τῆς πατρίδος, ἡμᾶς δημοκρατεῖται.  
 καὶ τὰ μὲν ἐμὰ ὡς αὐτὸν ἔχει, ἀσφαλῶς ἔχει. ἀγαθὸς γὰρ  
 καὶ ζῶν καὶ ἀποθνήσκων ἔσομαι. ὅπως δὲ καὶ ἐπερὶ τῆς  
 πατρίδος πολιτῶμεθα, πείθε τὸν κλέαρχον, ὅτι φιλο-  
 σοφῆσαντες, ἡσυχίαις γλιχόμεθα, καὶ τελέως ἀπολίτῶται

C τὰς ψυ-

ΧΙΩΝΟΣ

πάς ψυχὰς ἐσμέν. Ταῦτα δὲ καὶ διὰ Νύμφιδ<sup>ος</sup> πείθει  
αὐτὸν, ὅς ἡμῖν μὲν Φίλ<sup>ος</sup>, ἐκείνῳ δὲ καὶ συγγρηῆς ἐσιν.  
οὕτω γὰρ αὐτὸν <sup>longissime</sup> πρῶτα<sup>τα</sup> πᾶσης <sup>a sufficiens</sup> ἀποψίας ἀπάγοιτο. ἀ-  
<sup>aperitissime</sup>προκαλυπλῶς δὲ σοὶ γράφομεν, ἐπεὶ καὶ πεισθεῖς Ἰππιθέμε-  
θα ἀνδράσι πάς Ἰππιθολάς, καὶ κλέαρχ<sup>ος</sup>, ὡς ἐδήλους, κα-  
λῶς ποιῶν, οὐ γούω ταῦτα ἔπιλυπραγμαθεῖ.

τῶ ἀπαλ. καὶ ἀποψίας ἀπάγοιτο

Εἰς Βυζάντιον φρασυτέρω μὲν, ταχέει δ' ἔν πλῶ δια- <sup>invalens</sup>  
ἀπεκύνωθεις, ἐγνων αὐτὸς τε Ἰππιθέμεθα χρόνον, ὃν αὐ μοι κατ <sup>quali tempore</sup>  
λῶς ἔχειν δοκῆ, καὶ πρὸς ὑμᾶς ἐκπέμψαι κρέυλον τῶν <sup>modum</sup>  
φρασυτέρω, ἵνα τὴν κάθοδον πρᾶψωμεν ὠφελίμως τῇ πα- <sup>um</sup>

<sup>in</sup>πείδι. τὸ μὲν γὰρ ἡμέτερον ἀσφαλές, ὅτι Ἰππι κλέαρχ<sup>ος</sup> <sup>est</sup>

1. ἡμῶν ὡς ἐν ἀμύμα <sup>est</sup> τῶν ἐπιβῶν γνάμην δηλῶσαι. ἐμοὶ γὰρ δοκεῖ τῇ μὲν πα- <sup>est</sup>

<sup>in</sup>πείδι ὁ μέγισ<sup>τος</sup> εἶναι κίνδυν<sup>ος</sup> μετ' ἀτυχίας ἤδη πα- <sup>est</sup>

<sup>est</sup>ρούσης. νῦν τε γὰρ, ὡς πωθάνομαι, σφαγᾶς τε ἀνδρῶν <sup>est</sup>

<sup>est</sup>καὶ φυγᾶς ὑπομένει: σερραμένη μὲν τῶν δέξτων πολιτῶν <sup>est</sup>

<sup>est</sup>τοῖς δὲ ἀσεβεσάτοις δουλοῦσα. καὶ εἰσαυθίας οὐχ ὁ τυ- <sup>est</sup>

<sup>est</sup>χῶν αὐτῇ κίνδυν<sup>ος</sup>, μήποτε ἐκ τῆς πεί τούτων οὕτω <sup>est</sup>

<sup>est</sup>χίας, οἷς μὲν πῶ<sup>τος</sup> τὸ τυραννεῖν, οἷς δὲ σωθήσεια δου- <sup>est</sup>

<sup>est</sup>λείας γήνται, καὶ τὸ λοιπὸν εἰς μοναρχίαν ἀκατάληκτον <sup>est</sup>

<sup>est</sup>ἡμῶν εἰσῆ τὰ πρᾶγματα. μικρὰ γὰρ δὴ ῥοπαὴ καὶ τῶν πολυχρο- <sup>est</sup>

<sup>est</sup>νηνίων καὶ σχεδὸν εἰπεῖν ἀπαύτων ἀρχουσι κακῶν, καὶ ἐγγυστ<sup>ος</sup> <sup>est</sup>

<sup>est</sup>ὁμοιόν τι ποιῶσι τοῖς νοσήμασι τῶν σωμάτων. ὡς περὶ γὰρ <sup>est</sup>

<sup>est</sup>ἐκείνα πεί μὲν πάς δέχας ῥᾶον ἀπολύεται τῶν ἀνθρώ- <sup>est</sup>

<sup>est</sup>πων, ἐπιχύσαντα δὲ δυσίατα καὶ τελέως ἀνίατα γίνε<sup>ται</sup>, <sup>est</sup>

οὕτω

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

ούτω καὶ ἐν ταῖς πολιτείαις νοσήματα, μέγρι μὲν μνή-  
μη τὴ ἐλευθερίας ἰσχυρῆ, καὶ ἐπέρχεται τοῖς δουλουμένοις  
παράταξις, λύσις ὀχυρὰ γίνεται προσβουλόμενον τὸ πλῆ-  
θος: ἐπειδὴν δὲ ἀπαξ ὑπερμάχη τὸ κακὸν, καὶ μη-  
κέτι ἢ τοῖς ἀνθρώποις λόγῳ, ὅπως αὐτὸ ἀπαλλάξωσιν  
ἑαυτῶν, ἀλλ' ὅπως αὐτὰ ῥᾶστα ἐν αὐτῷ διάγοισιν, τότε ὁ παν-  
τελής ὄλεθρος γίνεται. ἢ μὲν οὖν πατέρις ἐχθροῦ τοῖς  
κακοῖς καὶ κινδύοις ἐπὶν. ἐγὼ δὲ, εἰ μὲν αὐτὸ ἐφ' ἑαυ-  
τοῦ βούλοιο τέρμον σκέπτεσθαι, καὶ πάνυ ἀσφαλῆς εἰμι.  
δουλείαν γὰρ ταύτην ἔγωγε νομίζω, ἢ μετὰ τῶν σαμάτων καὶ  
τῆς ψυχῆς ὑφ' ἑαυτῷ ἔχει, ἢ δὲ τῆς μὲν, ψυχῆς οὐδὲ  
ἐπιουῖ ἀπομένῃ, τὸ δὲ σῶμα μόνον ἔχουσα, οὐδὲ δουλεία  
τυγχάνειν ἐμοὶ γε δοκεῖ. τεκμήριον δὲ. εἴτι γὰρ δουλείας  
κακὸν, τοῦτο δὲ πρὸς ψυχῆν καθαίνει, ἐπεὶ καὶ ἄλλως οὐδὲ  
κακὸν λέγοιτο αὐτῷ. φόβος γὰρ τοῦ παθεῖν, καὶ ἐκ τοῦ  
παθεῖν λύπη, τὰ δεινότατα τοῖς μὴ ἐλευθεροῖς. τί οὖν;  
αὐτὸς μὴ φοβῆται μέλλον κακὸν, μηδὲ δὲ τῷ γινο-  
μένῳ ἀχθῆται, δουλεύσει; καὶ πῶς ὅγε μὴ ἔχων τὰ δεσ-  
λείας κακά; ἴδιον οὖν ποιῶν με ὑπὸ φιλοσοφίας γε-  
νόμενον, ὅποιον καὶ δῆσῃ κλεαρχῷ, καὶ ὅποιον δράση  
τῶν χαλεπῶν, οὐδέποτε ποιήσει δούλον. οὐδέποτε γὰρ  
μου τῷ ψυχῆν χειρώσεται, ἐν ἣ τὸ δούλον ἢ τὸ ἐλευ-  
θερον: ἐπεὶ σῶμά γε αἰεὶ σωτηρίας ἠπὼν, καὶ ὑπὸ  
ἀνδρὶ μὴ τάπηται δεσπότη: λέω δὲ με δεσποτῆν,  
τότε καὶ τῷ τελείαν ἐλευθερίαν χαρίζεται μοι. ἢ καὶ  
γὰρ, εἰδὲ τὸ πεινῶν σῶμα ἀκράσως τῇ ἑαυτοῦ δουλείᾳ,  
ταύτη

ῥητὰ δὲ ἐν μνηστικῇ ἐπιτομῇ  
καὶ τῷ γὰρ αὐτῷ ἐν  
ἐπιτομῇ ἀναγνώστῳ  
ἐπὶ τῷ πρῶτῳ βιβλίῳ  
ἐπιτομῆς

ἐν τῇ φιλοσοφίᾳ  
ἢ καὶ ἐν τῇ  
ἐπιτομῇ τῆς  
ἐπιτομῆς

ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς

ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς  
ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς

ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς  
ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς

ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς  
ἐπιτομῆς τῆς  
ἐπιτομῆς



αφ' ἑωυτοῦ ἀλλ' ἐν τῷ ἔργῳ ἵκεν ἵνα  
ἐλευθερωθῆται

αφ' ἑωυτοῦ φάσμα

Τούτη τίνα οικονομίαν ἐλλείπειν δοκεῖς κεχωρισμένη τῶν  
σώματι; οὐ μόνον δὲ ἐγὼ, ὁ αὐτὸς πάχων, ἐλευθεροῦμαι, <sup>ἠεὶ σὺ γὰρ</sup>  
ἀλλὰ καὶ κλεάρχου; ὁ αὐτὸς διαθήσει με, δοῦλον γνήσειαι. <sup>ἠεὶ σὺ γὰρ</sup>  
φοβούμενος γὰρ διαθήσει: δέξου ἢ οὐδὲν ἔχει ψυχῆς ἐ-  
λευθερία. ταῖς μὲν οὖν ἐμὰ ἐφ' ἑαυτῶν σκοπεῖν, ὡς ὄρας,  
ἀσφαλέστερα εἰς τὸ παθεῖν, ἢ κλεάρχου εἰς τὸ δράσαι. καὶ <sup>μὴ</sup>  
τὸ γὰρ ἐμὸν σοὶ Ἰπριμελείας, ἀλλ' ὀλιγορίας δέεται. τὸ γὰρ <sup>μὴ</sup>

ἄρα φροντίζειν περὶ αὐτῶν, ἀνδρός ἐσίν οὐ πάνυ ἐλευ-  
θεροῦ: τὰ δὲ τῆς πατρίδος σωτηριώδη μοι, σοὶ Ἰπριμε-  
πει τὴν αὐτόνομον τούτῳ ἐλευθερίαν, ἀλλὰ καὶ πολιτεύ-  
σασθαι ἀναγκάζει καὶ κίνδυνον ἔχειν: κίνδυνον δὲ, οὐχι μὴ  
αὐτὸς τι πάθῃ, ἀλλ' ἵνα μὴ πάχουσάντη τὴν πατρίδα σοὶ  
ἄφελῆσω. διὰ τοῦτο μοι ἀνάγκη καίπερ μὴ φοβουμέ-  
νω, θάνατον προνοεῖν, ὅπως μὴ πρότερον ἀποθάνω, ἢ ὑπὲρ  
τῆς πατρίδος ἀποθανεῖν διωήσωμαι. πολιτεύου δὲ πρὸς  
τὸν τύραννον, ἃ καὶ πρότερόν σοι ἔγραψον, πείθειν αὐτόν.  
ὅτι ἡσυχίας ἐρασάει ἐσμέν, καὶ γράφε ἡμῖν, εἰ καὶ ἄλλο  
τί σοι δοκῆ πρὸς τὴν αὐτῆς πολιτείαν ἀνήκειν: ἐπεὶ ἀ-  
νάγκη μοι εἰς τὴν τῆς πατρίδος ἐλευθερίαν, ὑφαιρέειν τι  
τῆς ἑαυτοῦ, φροντίζοντι περὶ τούτων καὶ βελδομένω.

ἵνα μὴ γὰρ ἕνωσιν  
ἐλευθερίας ἕνωσιν  
φάσμα ἢ γὰρ ὁφθαλμῶν

Τῷ αὐτῷ.

Επὶ μὲν τῷ συμπαίθεσθαι τὸν τύραννον, οἷς περὶ ἐμοῦ  
πρὸς αὐτόν ἐλεγες, συγχαίρω τῇ πατρίδι. γράψω δὲ καὶ  
αὐτὸς ὡς σιωβούλους, ἀπάγων αὐτὸν ἀπὸ τὰ ληθοῦς  
ὡς μάλιτα ἐνεσι. τέναντίον γὰρ αὐτῶν ποιῶν, ψεύσαιμι  
σοῦ ἑαυτοῦ πολίτας καὶ φίλους, ὡς ἐξ ἐμοῦ ἤλπισαν,

ἠεὶ σὺ γὰρ  
ἠεὶ σὺ γὰρ



ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

καὶ ταῦτα σὺν ἀξίους ὄντας ἀπατάσθαι. τὸ δὲ εἶναι τὸν τυραννον τελέως καὶ χαλεπὸν, ὠφελιμώτερον ἔγωγε ἠγοῦμαι τῇ πόλει, ἢ τὸ δημοκοπεῖν αὐτὸν, καὶ προκαλύπτειν δόξαν μετριοτήτης. τὸ δὲ αἴτιον, ὅτι οἱ μὲν χαλεπὴ διαφθείρουσιν ταχέως, καὶ αὐτὴ μὴ καταλυθῶσι, μῖσθον ὁμῶς τυραννίδος κατέλιπον τῷ πλήθει, καὶ παντελῶς τῷ μοναρχίαν ἐφ' ἑαυτὰν διέβαλον, οὕτως οὐδὲ συμβαίνει τὸν γούμῳ λοιπὸν χρόνον φυλακτικωτέρους γίνεσθαι καὶ προνοητικωτέρους τῆς δημοκρατίας ἀπάντας. ὅταν δέ τις δουλωθῆται ἐκδημοκοπήσει οὐδὲ δουλωθέντας, καὶ ἀνααιρεθῆται ταχέως, πολλὰ ὁμῶς ἐγκαταλείπει τυραννίδος ἐν ἐκάστοις κακὰ: ὧν οἱ μὲν εὖ τι πεθουῦντες πείσεσθαι, οἱ δὲ ἄλλως δημαγωγηθέντες, τυφλοὶ τῶν κοινῆ συμφερόντων εἰσὶ καὶ τὸν τε ἀνααιρεθέντα οικτιροῦσιν ὡς δὴ μέτριον, καὶ τῷ τυραννίδα οὐχ ὡς ἀνήκεσθον τι φυλάττουσιν κακόν: ἀγνοοῦντες, ὅτι αὐτὰ πάντα τις ἢ μέτριος τυραννος, διὰ τοῦτο καταλυτέος ἐστίν, ὅτι ἔξουσι αὐτῷ καὶ χαλεπῶ εἶναι κλέαρχος δὴ ὠμὸς ὢν, αὐτὸς τε δὲ χείρωτ' ἐσθὶ μισοῦμενος, καὶ τοῖς ἄλλοις δυσκατορθώτερον ποιήσει τῷ τυραννίδα. προσποιούμενος δὲ εἶναι μέτριος, αὐτὸς τε αὐτὸ τῷ δόξαν ἐκαρπώσατο, τοῖς τε βουλομένοις ὑπεροχὴν δέμνατον ἀπολίπει τῷ ἀκρόπολιν: ἀλλὰ ταῦτα μὲν καὶ σοὶ δηλαδὴ φανερά. τὸν δὲ τρόπον τῆς γραφῆς καὶ ἀποδόσεως τῶν ἑπιστολῶν χαίρω, ὅτι δὴ σὺ τε ἀσφαλῆ ἐνόμισας, καὶ τὸ τέλος μαρτυρεῖ, μὴ ἀτόπως δῆρ' ἄσφατον ἔπεμψα δέ σοι καὶ τὸ ἀντίγραφον τῆς πρὸς τὸν κλέαρχον

Dem.

ὁμοίως ἔγραψα καὶ ἀδιναντῷ

αὐτὸν ὅτι τὸ δημοκρατικόν ἔστι καλόν

καὶ εὖ πεθουῦντες πείσεσθαι

καὶ τὸν τυραννίδα οὐχ ὡς ἀνήκεσθον τι φυλάττουσιν κακόν

ὁμοίως ἔγραψα καὶ ἀδιναντῷ



οὐκ ἔστιν ἀλλήλων  
λεβήτι γὰρ ἡ δακτύλιος  
καὶ τὸ βυζάντιον

χρον Ἰπποκράτους, διθυραμβικωτέραν ποιήσας Ἰππικῆδες αὐτῶν,  
ἐν ἡμῶν καταφρονῆ, ὡς λογομανουῶτων τελέως.

Κλεάρχω.

Ὁ Κλεάρχω γὰρ ἀπὸ τῆς  
ἐπιπέδου, Σιδῶνα

Ἐν ἀθήναις μοι φιλοσοφίας χάριν διατρέξουσι τῶν τε  
κοινῶν ἴνες φίλων, καὶ ὁ πατήρ ἔγραψεν, ὡς δι' ἰσοψίας  
εἶλω πρὸς σέ: καὶ αἰτίας ἐκέλευεν ἀπολύσασθαι. τοῦτο γὰρ δίκαιον  
εἶναι, καὶ αὐτῶ μοι ἀμεινον. ἐγὼ δὲ, ὅτι μὲν ὀρθῶς  
παρήνοισι ταῦτα, σαφῶς ἤδειν: ἠγνόουσι δὲ, ἀφ' ὧν διε-  
βλήθη. καὶ τοῦτό μοι πρὸς τὴν ἀπολογία ἦν εὐπορον.

1. Αὐτῶν  
ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

δὲ γὰρ αὐτὸς παρῶν, ὅτι παρεβάλλου τὴν δέχλω, οὔτε ἀ-  
πὼν ἐδωάμην ἐναντιούσας: ἐστὶ ὅλως ἢ λόγῳ ἢ ἔργον πᾶσι  
τῶν ἐμῶν Ἰππικῆσαν ἵνα ἔχει πρὸς τὰ αὐτόθι πράγματα.

2. ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

τινες οὐκ ἀδιαπόντιοι πρὸς μόνον ἀντιώσεις ἀνθρώ-  
που μετ' ὀλίγων οἰκετῶν ἀποδημοῦσι, ὅτι ἐγὼ εὐε-  
σκον: καὶ διὰ τοῦτο γὰρ ἠπόρου ἀπολογίας, ὅτι οὐδὲν ἐώ-  
ρων τὸ κατηγορούμενον. ὅτι ἠπόρου δὲ πάλιν τῶ μηδὲν  
ἐννοεῖσθαι τοιοῦτον, ὅποιον ἴσως ἰσοπιδόμα, ἀλλὰ καὶ πᾶ-  
ν ἔχων πείθειν σε, ὅτι ἡ ἐμὴ ψυχὴ οὐδὲν εὐεμβατὴς ἐστὶ τῶν  
τοιούτων βουλεύματων. οἶμαι μὲν οὐκ, εἰ καὶ μὴ πεφι-  
λοσοφῆσαι, ἱκανὸν αὖ γινέσθαι τεκμήριον τοῦ μὴ ἀπεχθῶς  
ἔχειν πρὸς σέ, τὸ μηδὲ ἠδικῆσθαι ἡ ἰσοπιδόμα. οὐδὲ γὰρ οἱ  
ἀφιλοσόφητοι μὴ παντάπασί γε μανέντες, καθ' ἠδονὴν ἵνα  
πρὸς ἐπαχθείας ἐπαναιρουῦνται: οὐδὲ ἔρωτάς πιναι ὡσπερ  
παιδικῶν Ἰππικῆσμάτων, οὕτω καὶ μίσους λαμβάνου-  
σι: πολλοὶ δὲ: ἀλλὰ καὶ πάνυ Ἰππικῆσαι, ὅτι οὐδὲν ἀν-  
θρώποις ἀπεχθείας αἰσχυρότερον. ὅταν ἢ ἰσοπιδόμα ἀνηκέστου ἵ-  
νους δι-  
αβασθῶν ἡ μὴ  
μακρῶν ἰσοπιδόμα  
ἐπιπέδου

ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

τινες οὐκ ἀδιαπόντιοι πρὸς μόνον ἀντιώσεις ἀνθρώ-  
που μετ' ὀλίγων οἰκετῶν ἀποδημοῦσι, ὅτι ἐγὼ εὐε-  
σκον: καὶ διὰ τοῦτο γὰρ ἠπόρου ἀπολογίας, ὅτι οὐδὲν ἐώ-  
ρων τὸ κατηγορούμενον. ὅτι ἠπόρου δὲ πάλιν τῶ μηδὲν  
ἐννοεῖσθαι τοιοῦτον, ὅποιον ἴσως ἰσοπιδόμα, ἀλλὰ καὶ πᾶ-  
ν ἔχων πείθειν σε, ὅτι ἡ ἐμὴ ψυχὴ οὐδὲν εὐεμβατὴς ἐστὶ τῶν  
τοιούτων βουλεύματων. οἶμαι μὲν οὐκ, εἰ καὶ μὴ πεφι-  
λοσοφῆσαι, ἱκανὸν αὖ γινέσθαι τεκμήριον τοῦ μὴ ἀπεχθῶς  
ἔχειν πρὸς σέ, τὸ μηδὲ ἠδικῆσθαι ἡ ἰσοπιδόμα. οὐδὲ γὰρ οἱ  
ἀφιλοσόφητοι μὴ παντάπασί γε μανέντες, καθ' ἠδονὴν ἵνα  
πρὸς ἐπαχθείας ἐπαναιρουῦνται: οὐδὲ ἔρωτάς πιναι ὡσπερ  
παιδικῶν Ἰππικῆσμάτων, οὕτω καὶ μίσους λαμβάνου-  
σι: πολλοὶ δὲ: ἀλλὰ καὶ πάνυ Ἰππικῆσαι, ὅτι οὐδὲν ἀν-  
θρώποις ἀπεχθείας αἰσχυρότερον. ὅταν ἢ ἰσοπιδόμα ἀνηκέστου ἵ-  
νους δι-  
αβασθῶν ἡ μὴ  
μακρῶν ἰσοπιδόμα  
ἐπιπέδου

ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

ἐπιπέδου ἀπὸ τῆς ἐπιπέδου

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

ἵνα μὴ πρὸς διαιρεθῶσιν ἀπὸ ἀλλήλων τὰς ψυχὰς, τότε ἀπεχθανόντες, καὶ οὐδὲ τότε ἐκόντες. ἡμῖν δὲ μέχρι τῆς γυνῆ ἡμέρας οὐδὲν οὔτε μέγα οὔτε μικρὸν ὑπερήκων πρὸς ἀλλήλους ἀπεχθείας ἔργον. ἀλλὰ σὺ μὲν οὐδὲν πλέον ὑπονοίας ἢ λόγους. ἐγὼ δὲ καθαρῶς τὴν ψυχὴν ἢ ἀπὸ τέτων. τί οὐ βούλομαι ἐξαίφνης πασιάζω πρὸς σέ; καὶ ταῦτα μηδέπω ἢ τήμερον ἐωρακῶς δεχομένῳ ὑπὸ σοῦ τὴν πατρίδα, ἢ ἢ δὲ διὰ φυσῶσί με αἱ πολλὰς τριήρεις καὶ οἱ ἰππεῖς, ἵνα εἴ μὴ δὲν ἄλλο, ὑποπτεύσῃς τότε διωαδαί με ἐχθρὸν εἶναι: ἀλλὰ ἀπεδημήσομεν σὺν ῥητῶν θεράπυσσι καὶ φίλοις δύο ἡρακλείδῃ καὶ ἀγάθωνι. ἀναλύω δὲ δύο τῶν οἰκετῶν ἀπεβαλόντων. ταῦτα δὲ σοὶ οἶδ', ὅπως πείθομαι σε ἰκανῶς εἶναι παρρησιαστικῶς ἐπὶ σέ: ἐκείνο δὲ οὐ σκοπεῖς, ὅτι εἰ σωθήσειν ἐμαυτὰ δικαίως ὑποπτεύομένῳ, σοὶ ἂν ποτε ἐκὼν ἐμαυτὸν ἐνεχείριζον τὰ ὑποπτεύοντι. ἢ οὕτω τις ἐραστῆς ἀπεχθείων εἶμι, ὥς τε μηδὲ τὴν πρὸς ἐμαυτὸν φυλάττειν Φιλίαν, ἀλλὰ ἐκοντὶ ἐγχειρίζειν τὸ σῶμα τοῖς δικαίως αὐτὸ τιμωρησομένοις; ἀλλὰ ταῦτα μὲν καὶ τοῖς μὴ φιλοσοφῆσαι ἰκανῶς, μᾶλλον δὲ πέρα τοῦ ἰκανοῦ ἀπολογία. ἐγὼ δὲ οὐδὲ ἄλλως ἀφύης γινόμενος πρὸς τὰ ἐκ τῆς φιλοσοφίας ἀγαθὰ, συνέλαβον τῆ φύσει ὡς μάλιστ' ἐλεύ: καὶ νεανίας γινόμενος, σοὶ δεχάς, οὐδὲ φιλοτιμίας εἰλόμην, ἀλλὰ δόθεως αὐτῆς ἡρώων τῆς φύσεως τῶν λόγων: καὶ οὗτός με ὁ ἔρωσ ἡγάγη εἰς ἀθήνας καὶ πλάτωνι ἐποίησε φίλον: καὶ μέχρι γυνῆ, οὐπω αὐτῷ πέπλησμαι. φύσεως μὲν οὐκ οὕτως ἔχων πρὸς ἡσυχίαν, ὡς ἐπὶ παντελῶς νέων, κατὰ φρονήσας πάντων.

Marginal notes on the left side of the page, including fragments of text from the adjacent page and some illegible characters.

Marginal notes on the right side of the page, including fragments of text from the adjacent page and some illegible characters.



πάντων, ὅσοι ἄρχειν βασιλικωτέρου βίου διώσται. ἐλθῶν  
 δὲ εἰς ἀθλῶας, οὔτε ἐκωηγέτω, οὔδ' ἐναύτης εἰς ἐλλή-  
 σποντον ἴππ' ἀλακταμονίους σὺν ἀθληαίοις ἔσπλεον: οὔδ' ἐ-  
 ταῦτα ἐπαιδύομαι, ἀφ' ὧν τυράννοις καὶ βασιλεῦσιν  
 ἐχθρὸς ἔσομαι. ἀλλ' ἀνδρὶ ἡσυχίας ἐρατῆ διελεγόμεν τὸν  
 ἐγγιστα θεῷ λόγον παιδύομαι: καὶ μοι πρῶτον παρ'  
 αὐτοῦ παρηγγέλη ἡσυχίαν ποθεῖν. ταῦτ' ἄρα τὸ  
 φιλοσοφίαν λόγου φῶς εἶναι: τὴν δὲ πολιτείαν καὶ πο-  
 λυπραγμοσύνην, ὡς περὶ ζόφον ἵνα ἴππικαλύπτειν, καὶ  
 ἀνδρείον ποιεῖν τοῖς ἐρδυνῶσιν. ὡς δὲ οὔτε πεφυκένας  
 κακὸς ἐδόκειω πρὸς αὐτὴν, οὔτε πείθεσθαι ῥαδίως πρὸς αὐ-  
 τῆς, τὴν καὶ ἡδὴ θεὸν πάντων ἐπόπην, καὶ κόσμου  
 κατασκευῆν ἐμάνθανον, καὶ φύσεως δεχθῆς ἐώρων, καὶ δι-  
 καιοσύνην τιμαῦν ἐδιδασκόμην, καὶ ὅσα τοιαῦτα ἄλλα παι-  
 δάσκει φιλοσοφία: καὶ οὔδ' οὐχ ὅπως τὸ εἰδέναι ταῦτα,  
 ἀλλ' οὔδ' ἐπιζητεῖν τιμιώτερον. τί γὰρ κάλλιστον ἢ ἀν-  
 θρωπῶν ὄντα θνητῆς φύσεως καὶ θεοῦ κεκραμένον μοιρα-  
 ῖοις δικαιοῦν τοῖς ἀθανάτοις ἑαυτοῦ, καὶ ταῦτα, πρὸς  
 τὸ συγγρῆς ἀγαθῶν συγγρῆ δὲ τὰ θεῶν τὰ θεῖα λέγω.  
 ταῦτα ἡσυχίαν τε καὶ ἐσπούδαζον μαθεῖν. πολιτείας δὲ,  
 (ἀνέξῃ γὰρ μετὰ παρρησίας μου λέγονται) οὔδ' ἐμνή-  
 σθαι ἠξίω. ἔμαθον δὲ ἄλλα τε πολλὰ καὶ ταῦτα, οἷς νῦν  
 χρῆσομαι πρὸς σέ: τὸν μὲν μὴ ἀδικοῦντα τιμαῦν: τὸν δὲ  
 ἀδικῶντα ἄριστον μὲν δειρογασίαις ἀμείβεσθαι, εἰ δὲ μήγε,  
 ἡσυχία: καὶ φίλον μὲν τιμιώτατον ἡγεῖσθαι, ἐχθρὸν δὲ μη-  
 δένα ἑαυτῷ κατασκευάζειν: καὶ τὸν ὄντα, φίλον ποιῆσαι: καὶ  
 μηδέν

10. ἐπιθυμῶν  
 διατοῦ ὄντων

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ

μηδέν τηλικούτον νομίζεις κακόν, ὅσον αὐτὸν ταραξείη τῷ  
 ψυχῷ ἢ τῶν οἰκείων ἔργων ἀποτρέψει πρὸς ἕτερα. ἀ-  
 γάγε <sup>ἀποκείω</sup> δὴ βούλω μοι νομίζεις χρεῖσθαι ταῦτα εἰδόντι; μηδα-  
 μῶς. ἀλλὰ σὺ μὲν ἀποκείω πολέμων ἔργα καὶ πολι-  
 τειῶν: ἡμῖν δὲ τῆς σῆς τοσούτον ἀποτεμῆσθαι τυραννίδος,  
 ὅσον ἀταραχῶ ἀνδρὶ δοκεῖ ἐνησυχάσαι. πείθομαι δὲ  
 ὅτι <sup>καὶ</sup> καὶ διαλέγεσθαι με ἀφῆς τοῖς φίλοις, ἡρεμαίους  
 αὐτοὺς ποιήσαιμι καὶ ἀπλιτότους, ὧν σὺ βούλει, διε-  
 ξιών τὰ αἰεὶ ἡμῖν μελετώμενα φιλοσοφίας ἐγκώμια: ἐπεὶ  
 καὶ τελέως αὐτὸν εἶλω μὴ ταῦτα φρονῶν ἀχάρις. Φέρε  
 γὰρ εἰ μοι τραχημένω, ὧν σὺ ὑποπιδείεις, ἡ πραγματεία ἐ-  
 πισταίη θεὸς ἡσυχία, καὶ ταῦτα λέγοι: ἀχάρις εἰ καὶ  
 πονηρὸς, ὡ χίων: καὶ οὔτε τῶν καλῶν ἐκείνων μαθημά-  
 τῶν, οὔτε ὅλως σεαυτοῦ μνήμην ἔχεις: ἐμοὶ χρεώμενος, δι-  
 καιοσύνην ἡσκήσας καὶ σωφροσύνην ἐκτήσω: καὶ θεὸν  
 ἔμαθες ἢ τῷ σεαυτοῦ πρὸς αὐτὸν συγγήριον ἀνενεώσω: καὶ  
 τῶν ταπεινοτέρων τούτων, θαυμασῶν δὲ τοῖς ἄλλοις κα-  
 τεφρόνησας, φιλοτιμίας, καὶ πλούτου, καὶ ὅσα τούτοις ὁ-  
 μοια: εἶπε νῦν, ὅτε ἀποδιδόναι σε δεῖ τῷ χάρι, μεί-  
 ζονι ἤδη νόμῳ καὶ κρείττονι ψυχῇ σωόντα μοι καὶ διαλε-  
 γόμενον ἀπολείψεις με, οὐδὲ μεμνημένον, ἅτι οὐ τὰ ἄλ-  
 λα μόνον ἐκ φιλοσοφίας ἔμαθες, ἀλλὰ καὶ τὸ ζητεῖν διε-  
 ξίως, ἃ μήπω οἶδας. καὶ πῶς αὐτὸν σύγε ζητήσεαι ἢ εὐ-  
 ροῖς ἐμοῦ σερόμενος; ταῦτ' εἰ λέγοι, τί αὐτὸν ἀποκρινάμενον  
 πρὸς αὐτὸν δίκαιον; ἐγὼ μὲν γὰρ οὐδὲν ὄρω. ἀλλὰ μὲν  
 εὖ ἴσθι ὡς ἐγὼ ταῦτα πρὸς ἑμαυτὸν αἰεὶ λέγω. λέγει γὰρ  
 D ἐκα-

Handwritten marginal notes in the left margin, including fragments of Greek text and some illegible characters.

Handwritten marginal notes in the right margin, including the phrase "καὶ τὸν κατὰ τὴν φύσιν" and other fragments.

ΧΙΩΝΟΣ

ἑκάστῳ πρὸς ἑαυτὸν ἀφρονεῖ. καὶ οὐκ ἀνὸς ποτε αὐτῶν ἀπολειφθεῖτω. ὥστε οὐδὲν σοι δεῖ ἐξ ἡμῶν εὐλογον. ἔδὲ γὰρ ἔδωκεν ἅψευδ' τῶν σῶν πραγμάτων ἢ ἐμὴ ἡσυχία.

Πλάτωνι.

Δυσὶν ἡμέραις τῶν διονυσίων ἔμπεσοθεν οὗτος πιστοτάτους μοι τῶν θεραπόντων πυλάδην καὶ φιλόκαλον ἐπεμίφα ὡς σέ. μέλλω γὰρ τοῖς διονυσίοις ἀπιτίθεσθαι τῷ τυράνῳ, πολιτοδοσάμεν ἑκ πολλοῦ ἀνύποπτον αὐτῷ χυεῖται. πέμπεται δὲ ἐν ταύτῃ τῇ ἡμέρᾳ πομπὴ τῷ διονύσῳ, καὶ δοκεῖ ὀλιγωρότερον ἔχειν δι' αὐτῶν τὰ τῶν δορυφόρων: εἰδὲ μὴ γε καὶ δέη διὰ πυρὸς ἐλθεῖν, οὐκ ὀκνήσομεν, ἔδὲ κατὰ χυνοῦμεν, οὔτε ἑαυτοὺς, οὔτε τινὲς σὺν φιλοσοφίᾳ. καὶ τὰ τῶν στωμοτῶν δὲ ἐστὶν ἡμῖν ὀχυρὰ: πίσει δὲ ἢ πλῆθει ὀχυρώτερα. οἶδα μὲν οὖν ὡς ἀναιρεθήσομαι: τελειώσας ἢ μόνον τυραννοκτονίαν, τοῦτο παθεῖν εὐχομαι. μετὰ παιᾶν γὰρ αὐτῶν καὶ νικητηρίων ἀπολείπομι τὸν βίον, ἐκ καταλύσας τινὲς τυραννίδα ἐξ ἀνθρώπων ἀπελδύσομαι. σημαίνει γὰρ μοι καὶ ἱερὰ καὶ οἰωνίσματα καὶ πᾶσα ἀπλῶς μαντεία θάνατον, κατορθώσαντι τινὲς πρᾶξιν. ἐθεασίμην ἢ καὶ αὐτὸς ἐναργετέραν ἢ κατ' ὄνειρον ὄψιν. ἔδοξε γάρ μοι γυνὴ θεῖόν τι χεῖμα κάλλους καὶ μεγέθους ἀναδεῖν με κοτίνῳ καὶ ταινίαις, καὶ μετὰ μικρὸν ἀποδείξαι τι μνήμα περικαλλές καὶ εἰπεῖν: ἐπειδὴ κέκμηκας, ὦ χίων, ἴθι εἰς τοῦτ' ἐμὸ μνήμα ἀναπαυσόμεν. ἑκ τούτου δὲ πῶς ὄνειρα τῶν εὐελπίς εἰμι καλοῦ θανάτου τυχεῖν. νομίζω γὰρ μηδὲν κίβδη-

ΕΠΙΣΤΟΛΑΙ.

κίβδηλον εἶναι ψυχῆς μάντιμα: ἐπεὶ καὶ σὺ οὕτως ἐγί-  
 νωσκες. εἰ δὲ καὶ ἀληθύσειεν ἡ μαντεία, μακαριώτα-  
 τον ἑμαυτὸν ἠγοῦμαι γνέσθαι, ἢ εἰ βίβῃ μοι μετὰ τῷ τυ-  
 ραννοκτονίᾳ εἰς γῆρας ἐδίδοτο. καλὸν γάρ μοι μεγάλα  
 διαπραξαμένῳ πρότερον ἐξ ἀνθρώπων ἀπαλλάττεσθαι, ἢ  
 χρόνου πῖ σωμαπολαύσαι. καὶ ἂν αὐτὸν δράσωμεν, πλὴν νο-  
 μιδήσειαι μείζονα, οἷς πεισόμεθα: καὶ αὐτὸι τιμιώτεροι  
 ἐσόμεθα τοῖς εὖ παθοῦσιν, εἰ τῷ ἰδίῳ θανάτῳ τῷ  
 ἐλευθερίαν αὐτοῖς ἀνησόμεθα. μείζων γὰρ ὠφέ-  
 λεια τοῖς διεργετηθεῖσιν εἶναι φάνεσθαι, ἢ  
 ὁ δράσας εἰ μεταλαμβάνει. οὕτως μὲν  
 δὴ προθύμως ἔχομεν πρὸς τῷ μαν-  
 τείᾳ τοῦ θανάτου. Σὺ δὲ  
 χαῖρέ τε, ὦ πλάτων, καὶ δι-  
 δαιμονοίης εἰς τέλειον γῆ-  
 ρας. προσαιγοῦ δὲ  
 δέ σε ὕστατα,  
 ὡς πείθο-  
 μαί.

τέλῃ.



ΕΠΙΤΟΛΕ

Faint, illegible text in a historical script, likely Greek, arranged in approximately 20 horizontal lines. The text is very faded and difficult to decipher.

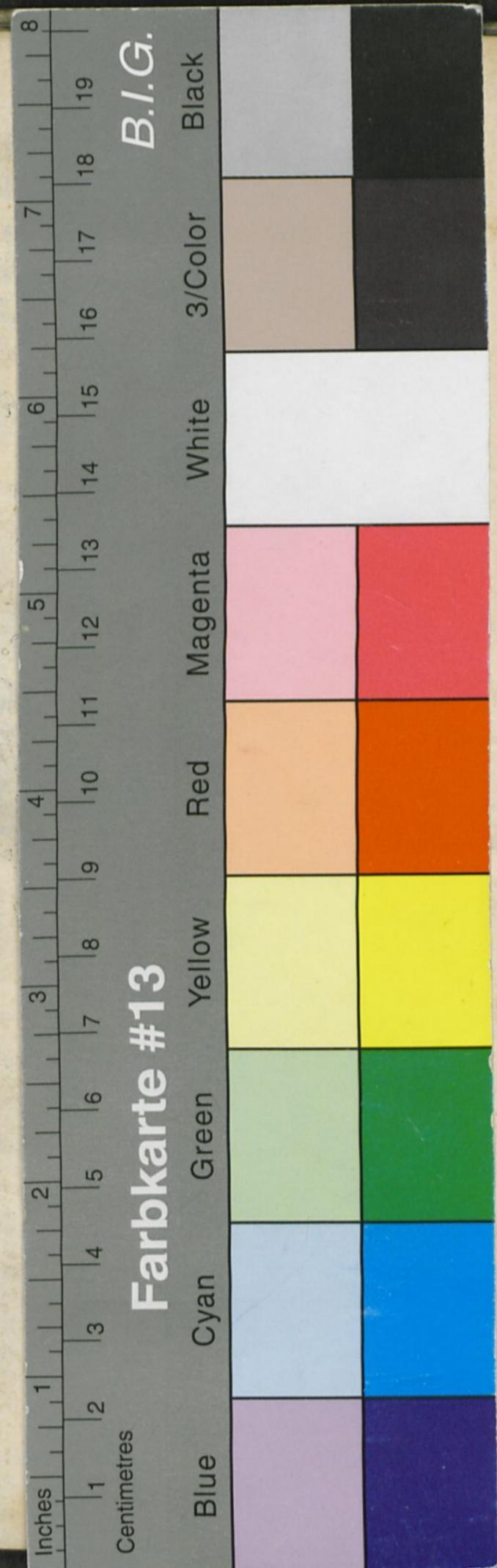


Ca vii. 8  
(X 220 304-1)

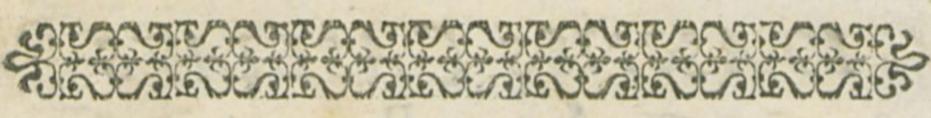
me

pariter aduersari dominum  
sunt aduersus humanam gene-  
ris omnium principem verus  
natum dicitur: duorum  
quendam et magistrum mili-  
tie sine scientia omnia plura  
genuit: et urbem castra duc-  
tore. Iste aduersus, ex occisus  
partibus. in celestis quomodo  
genuit: et in omnia dumi-  
luminis si quis sit compa-  
ratus aduget: et saluatis p-

et omnes principem  
pils ab oblectando desisti-  
quam que exalterant in-  
terit. Et hoc fuit can-  
teridi: quod folum manent  
tunc: et magnum. Petrus si-  
p ipsum semel uigilose spoli-  
comperit furo delectatis  
dom eorum: per deuotione  
confidens: semper: con-  
unt: et in partium legentia  
superuam oculis tradit



Ce 2901



CHIONIS PLATONICI  
EPISTOLÆ

~~10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19.~~

Edita opera Ioannis Caselij. *Itic est ille Chion, Philosophus  
quidem, sed Martios tamen  
gerens spiritus: qui Clearchum,  
Heracleæ Ponticæ crudelissimū  
tyrannū de medio sustulit.*



ROSTOCHII  
Typis Stephani Myliandrij.  
Anno MDXXCIII.

